Delhi Postal Regd. No. DL© -01/1272/2021-23 R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

vgZr mokp

एयं खु णाणिणो सारं,
जं ण हिंसइ कंचणं।
अहिंसा समयं चेव,
एयावंतं वियाणिया।

Kkuhgksusdk ;ghlkjgS
fdogfdlhdhfgalkugha
djrkAlerkvfgalkgS]
bruk ghmlstkuukgSA

ubZ fnYyh । o"kZ 25 । vad 2 । 16 & 22 vDVwcj] 2023 । izR;sd lkseokj । izdk'ku frfFk % 14&10&2023 । ist % 16 । ₹10 रुपये

अभातेममं के ४८वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'क्षितिज' का आयोजन

जीवन को अध्यात्म के अलंकारों से अलंकृत करें : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ६ अक्टूबर, २०२३

धर्मोद्योतकर, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती आगम की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि शास्त्र में तीन चीजें इस सूत्र में बताई गई हैं–शरीर चलना, इंद्रिय चलना और योग चलना। मनुष्य को शरीर प्राप्त है, यह स्थूल शरीर औदारिक शरीर है सूक्ष्म शरीर तेजस शरीर होता है और सूक्ष्मतर शरीर कार्मण शरीर होता है। कार्मण शरीर को कारण भी कहा गया है।

हमारे पास पाँच इंद्रियाँ हैं। मन, वचन, शरीर की प्रवृत्ति योग होता है। हमारे पास एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व-आत्मा है, जो हमारे जीवन का मूल तत्त्व है। आत्मा है, तो योग होता है। हमारे शरीर, इंद्रियों और योग में चंचलता होती है। चंचलता के साथ स्थिरता भी हो।

ध्यान की साधना में स्थिरता और शिथिलता भी आवश्यक होती है। योग साधना का अभ्यास करना चाहिए। किसका शरीर कितना सुंदर है, यह भी एक विषय है। सुंदरता ज्यादा न हो तो भी हमारा जीवन चल सकता है। सुंदरता से ज्यादा शरीर की स्वस्थता और सक्षमता का ज्यादा महत्त्व है। साधु को शरीर की सुंदरता पर ध्यान नहीं देना चाहिए। साधु तो स्व-पर कल्याण करने वाला होता है, इसलिए उसका शरीर स्वस्थ और सक्षम हो।

गृहस्थों के लिए शरीर, सुंदरता के साथ कपड़ों का महत्त्व भी है। पर इसे ज्यादा महत्त्व नहीं देना चाहिए। अलंकारों को भी ज्यादा महत्त्व नहीं देना चाहिए। बाहर के अलंकार तो भार है। आदमी गुणात्मक अलंकरणों को धारण करे। कान की शोभा ज्ञान की बात सुनने से है। बुरा देखो मत, बुरा बोलो मत, बुरा सुनो मत और बुरा सोचो मत। जीवन में सहजता-सादगी हो। ज्ञान, शिक्षा, कार्य कुशलता और सदाचार का जीवन में महत्त्व है।

हमें शरीर, इंद्रियाँ और योग प्राप्त है, इनका जीवन में सदुपयोग हो। हाथ की शोभा दान से, शरीर की शोभा सेवा से, परोपकारों से है। हम जीवन को अध्यात्म के अलंकारों से अलंकृत करें।

अखिल भारतीय महिला मंडल का मंचीय कार्यक्रम

पूज्यप्रवर ने निवर्तमान एवं नवनिर्वाचित अध्यक्षा को आशीर्वचन फरमाया। अभातेममं सशक्त संगठन है। इसकी अनेक गतिविधियाँ हैं। महिला मंडल का जगह-जगह सहयोग मिलता रहता है। तत्त्वज्ञान में भी विकास हो रहा है। इसके माध्यम से अनेक श्राविकाओं को विकास का अवसर मिलता है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी इसे विशेष संभाल रही हैं। इनके माध्यम से मंडल के समाचार मिलते रहते हैं। मंडल की संघ के प्रति श्रद्धा-भक्ति भी विशेष है।

दिल्ली-मुंबई महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। लगभग २५० क्षेत्रों से ११०० बहनों की इस अधिवेशन में उपस्थिति रही। कार्यकाल की उपलब्धियों को बताया। कल साधारण सदन में नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्षा के पद पर सरिता डागा का मनोनयन हुआ।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि अभातेममं का ४८वाँ अधिवेशन सौहार्दपूर्ण संपन्न हो रहा है। शाखा मंडल भी निर्देशों को सजगता से पालन कर रहे हैं। आचार्य तुलसी शिक्षा योजना, तत्त्वज्ञान, तत्त्व-दर्शन इनके महत्त्वपूर्ण आयाम हैं। तत्त्वज्ञान से जीवन में पापभीरूता और वैराग्य के भाव आ सकते हैं। मंडल के सदस्यों चारित्र शुद्धता, ईमानदारी और परस्पर संबंध अच्छे हों। इनसे टीम में यूनिटी बढ़ती है, कार्य अच्छा कर सकती है। एक-दूसरे के प्रति सम्मान का भाव है। सब एक-दूसरे को सहयोग दें। समय का भी विसर्जन पदाधिकारियों को मंडल के विकास के लिए करना होगा तभी मंडल ऊँचाइयों को छू सकेगा।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि जीवन में धृति-धैर्य का महत्त्व होता है। धृति यानी मन को एक काम पर टिकाकर रखना। लक्ष्य को सफलता के साथ पाना है तो धैर्य रखना होगा। लक्ष्य पाने में असफलताएँ आ सकती हैं, पर धैर्य से आदमी कुछ हासिल कर सकता है। अधीरता रूपी दीमक समय रूपी जीवन को खा सकती है, समय का सदुपयोग हो। विपरीत स्थिति में भी समभाव रखें। पुरुषार्थ करने वाला ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकता है।

राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। 'श्राविका गौरव' पुरस्कार-२०२३ भंवरीदेवी भंसाली को, सीतादेवी सरावगी पुरस्कार शुभा मेहता एवं जयश्री भूरा को प्रदान किया गया। शुभा मेहता, जयश्री जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

अभातेममं की नवनिर्वाचित अध्यक्षा सरिता डागा को निवर्तमान अध्यक्षा नीलम सेठिया ने शपथ ग्रहण करवाई। नवनिर्वाचित अध्यक्षा ने अपने वक्तव्य में भावी योजनाओं के बारे में जानकारी दी। अपनी कार्यकारिणी व पदाधिकारियों की घोषणा करते हुए अपनी टीम को शपथ दिलवाई।

पूज्यप्रवर ने नई टीम को आशीर्वचन फरमाते हुए अभातेममं और विकास करता रहे, ऐसी प्रेरणा प्रदान करवाई।

चैनराज भंसाली ने भी अपनी माताजी की ओर से भावना अभिव्यक्त की।

सुमित्रा देवी बड़ाला ने २८ एवं सलोनी डागलिया ने २८ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 & 22 vDVwcj] 2023

F जब क्षयोपशम की स्थिति बनती है, तब संयम की भावना बनती है और वह उस दिशा में पादन्यास करता है।

–आचार्यश्री महाश्रमण

अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस एवं अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

जीवन में करें भगवती अहिंसा की आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, २ अक्टूबर, २०२३

अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस और अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अंतर्गत अहिंसा दिवस के अवसर पर अहिंसा यात्रा प्रवर्तक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि आज का दिन महात्मा गांधी से संबंधित है। अहिंसा एक व्यापक तत्त्व है। अहिंसा भगवती सब जीवों के लिए क्षेमंकर-कल्याणकारी है।

दुनिया का कौन सा धर्म है, जो अहिंसा को स्वीकार नहीं करता। अहिंसा के अनेक स्तर हो सकते हैं। एक साधु के जो अहिंसा के प्रावधान हैं, वह तो उच्च स्तर की अहिंसा है। गृहस्थ तो सामान्य स्तर पर अहिंसा का पालन करने वाला होता है। साधु के लिए महाव्रत और गृहस्थ के लिए अणुव्रत हो जाता है।

साधु को तो दया मूर्ति, अहिंसा मूर्ति होना चाहिए, उसके तो कण-कण में अहिंसा समाहित होती है। ऐसे साधु का दर्शन करने से ही आत्मा पवित्रता को प्राप्त कर लेती है। गृहस्थ जीवन में तो साधारणतया हिंसा हो जाती है। हिंसा के तीन प्रकार हो जाते हैं– आरंभजा, प्रतिरोधजा और संकल्पजा हिंसा।

आगम में कहा गया है कि शस्त्र का प्रयोग किसी भी जीव की हिंसा के लिए मत करो। बढ़िया है कि पूरे विश्व में निःशस्त्रीकरण हो जाए। सारे स्वानुशासित हो जाएँ। प्रशासन द्वारा कड़ाई भी शांति के लिए की जाती है। न्यायाधीश को तो अपराधी को सजा भी सुनानी पड़ सकती है। पर भावना हिंसा की न होकर सुधार की होनी चाहिए। आरंभजा और प्रतिरक्षात्मिकी हिंसा समाज में निंदनीय नहीं है।

संकल्पपूर्वक लोभ या आवेश के कारण होने वाली हिंसा गृहस्थ के लिए त्याज्य है, यह निंदनीय है, छोड़ने लायक हिंसा है। अणुव्रत आंदोलन तो मानव मात्र के कल्याण के लिए चलाया गया था। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के कार्यक्रम तो विभिन्न वर्गों में चलने चाहिए। व्यापारिक स्थल, स्कूल-कॉलेज या जेलों में ये कार्यक्रम होने चाहिए। जैनों के लिए तो वैसे ही लगभग बारह व्रत स्वीकार किए होते हैं।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त एक अवदान–प्रेक्षाध्यान

अहिंसा दिवस की जड़ें हमारे भीतर में : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, १० अक्टूबर, २०२३

प्रेक्षा अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन, प्रेक्षा इंटरनेशनल अध्यात्म साधना केंद्र व प्रेक्षा विश्व भारती द्वारा संयुक्त प्रेक्षा अधिवेशन शुरू हो रहा है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग से हम स्वयं सत्य की खोज कर सकते हैं। वर्तमान में जी सकते हैं।

ध्यान, योग के महान साधक, परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आर्षवाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में भगवान महावीर के साथ जो संवाद प्राप्त हुए हैं, उनका वर्णन प्राप्त होता है। अनेकों ने प्रश्न पूछे हैं, पर सबसे ज्यादा प्रश्नकर्ता तो भगवान गौतम स्वामी थे। वे भगवान के निकट रहने वाले और कृपा पात्र थे। जब उनका मन हुआ भगवान से प्रश्न पूछ लेते, तो भगवान उनका उत्तर भी दे देते।

श्राविका जयंती एवं अन्य तीर्थिकों ने भी प्रश्न पूछे हैं। गौतम ने प्रश्न पूछा–भंते! क्या जीवों के प्राणातिपात क्रिया होती है? उत्तर दिया गया–हाँ जीव प्राणातिपात-हिंसा भीतर लेते हैं। हिंसा-अहिंसा का सूक्ष्म विवेचन हो जाता है, यहाँ भाव की प्रधानता होती है। बाहर हिंसा नहीं होती है, पर भावों में हिंसा है, तो पाप कर्म का बंध हो सकता है। हम भीतर को देखने, जानने और रहने का प्रयास करें।

भीतर में रहने का प्रयास ध्यान है। ध्यान के प्रारंभ में प्रणाली-पद्धति बहुत उपयोगी होती है। गहराई में पहुँचने पर फिर ध्यान में प्रणाली की अपेक्षा नहीं रहती है। ध्यान भीतर की चीज है। वृत्ति भीतर में है तो फिर प्रवृत्ति सामने आती है। चित्त की निर्मलता, स्थिरता, समता-अहिंसा कितनी परिणित हुई है। हमारे में राग-द्वेष के भाव न रहें। ध्यान इतना सध जाए कि हर प्रवृत्ति में ध्यान रहे।

प्रेक्षाध्यान आगम सम्मत है। इसमें अपने आपको देखने की बात है। प्रेक्षाध्यान अध्यात्म की ध्यान योग की एक स्कूल है। ध्यान से पद्धति की पहचान है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ध्यान के अनेक प्रयोग कराया करते थे। वर्तमान में प्रेक्षाध्यान पद्धति प्रवर्धमान है। अहिंसा-हिंसा की जड़ें भीतर में रहती हैं। कार्मण शरीर हिंसा की जड़ है।

ध्यान, समता, अहिंसा–इनमें अभिन्नता दिखाई देती है। ये एक रूप में त्रिवेणी है। तीनों अलग-अलग भी दिख सकते हैं। जैसे एक हाथ में पाँच अंगुलियाँ होती हैं। हिंसा बाहर भी होती है, तो भीतर भी होती है। पाप कर्म का बंध भीतर से है, बाहर से पाप कर्म का बंध नहीं होता। ये सब जीव की परिणाम धारा पर निर्भर करता है। निर्जरा और संवर आध्यात्मिक चीज है, तो पुण्य-पाप भौतिक चीज है। हम हिंसा से बचकर अहिंसा के मार्ग पर चलने का प्रयास करें।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अभातेममं की नवमनोनीत अध्यक्षा सरिता डागा

नंदनवन।

अभातेममं के सत्र-२०२३-२०२५ के लिए नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा सहज, सरल, चिंतनशील एवं समाजसेवा में समर्पित व्यक्तित्व की धनी हैं। आपका जन्म राजस्थान के धार्मिक स्थल, तेरापंथ की वीर भूमि बीदासर में मांगीलाल सज्जन देवी बैद के घर हुआ। तीन भाई-बहनों में सबसे बड़ी सरिता बचपन से ही शिक्षा में अव्वल एवं कुशाग्र बुद्धि वाली थी। धार्मिक संस्कार आपको विरासत में मिले एवं उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आपकी संस्कारित धार्मिक चर्या परिणय बंधन के बाद भी अनवरत रही। श्रीडूंगरगढ़ के प्रतिष्ठित, धार्मिक जयपुर प्रवासी डागा परिवार तेजकरण-हुलासी देवी डागा के ज्येष्ठ पुत्र दौलत डागा के साथ आपकी शादी हुई। दौलत डागा भी समाज की स्थानीय एवं केंद्रीय विभिन्न संस्थाओं में अनेक पदों पर कुशलता से दायित्व निर्वहन कर चुके हैं एवं वर्तमान में केंद्रीय संस्था अणुविभा के आप सह-प्रबंध न्यासी हैं। सरिता की शादी के कुछ वर्षों बाद ही आपके सास-ससुर का एक दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। परिवार में दौलत डागा के तीन छोटे भाइयों यानी सरिता डागा के तीन देवरों की शादी का दायित्व बोध और ज्येष्ठ वधू के नाते पूरे परिवार को संभालना एक कसौटी भरा अवसर था, पर आज यह चार भाइयों का संयुक्त परिवार समाज के लिए अनुकरणीय उदाहरण एवं एक आदर्श परिवार के रूप में प्रतिष्ठित है।

सार-ससुर की प्रेरणा से शादी के पश्चात शीघ्र ही सरिता डागा तेरापंथ महिला मंडल की गतिविधियों एवं समाज सेवा के अनेक प्रकल्पों से जुड़ गई। लगभग २० वर्षों तक आप तेरापंथ महिला मंडल, सी-स्कीम, जयपुर के विभिन्न पदों पर दायित्व निर्वहन करते हुए सत्र-२००९-२०११ में आपने सफल अध्यक्षीय कार्यकाल पूरा किया। आपकी कार्यकुशलता, समर्पण भाव और प्रतिभा का मूल्यांकन करते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने २०११-२०१३ में प्रचार-प्रसार मंत्री के रूप में केंद्रीय टीम में जोड़ा। २०१३-२०१५ में फिर प्रचार-प्रसार मंत्री एवं २०१५-२०१७ तथा २०१७-२०१९ में कोषाध्यक्ष के दायित्व निर्वहन के बाद २०१७-२०१९, २०१९-२०२१ में उपाध्यक्ष पद पर सक्रियता से कार्य किया एवं मंडल की गतिविधियों एवं योजनाओं में अपने पुरुषार्थ का समुचित उपयोग किया। २०२१-२०२३ की केंद्रीय टीम में आपको वरिष्ठ उपाध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया। ५ राष्ट्रीय अध्यक्षों के साथ १२ वर्षों का कार्यकाल और पूर्वार्द्ध में २० वर्षों तक स्थानीय मंडल के कार्य में कुल ३२ वर्षों से आपने तेरापंथ महिला मंडल के साथ एक सक्रिय, जागरूक सैनानी की तरह कुशलता से कार्य किया।

आचार्यों एवं शासनमाता तथा साध्वीप्रमुखाश्रीजी की कृपा दृष्टि एवं चारित्रात्माओं के प्रति सेवा भावना से आपकी पहचान एक सुश्राविका के रूप में बन गई।

हंसमुख व्यवहार, चेहरे पर स्मित मुस्कान, सहज उदारता एवं आपकी प्रमोद भावना सबको सम्मोहित करती है। नियमित सामायिक, त्याग, तप आदि आपकी दिनचर्या के अंग हैं। समय-समय पर आपने कई तपस्याएँ भी की हैं। धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में तन, मन, धन से संलग्न आपका जीवन सतत अप्रमत्तता का जीवन है। संघीय गतिविधियों में आपकी सहभागिता सदैव परिलक्षित रहती है। तेरापंथ समाज की संस्थाओं के अलावा आप भारत जैन महामंडल की कार्यकारिणी सदस्य, रूवा महिला संगठन की कार्यकारिणी के साथ-साथ आप अनेक सामाजिक, शैक्षणिक संस्थानों से जुड़ी हुई हैं।

विकास महोत्सव के उपलक्ष्य में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित गीत

हम दृढ़ निश्चय कर पाएँ।
हम शिव संकल्प सजाएँ।
कठिनाई आने पर भी हम क्यों ज्यादा घबराएँ।।

विघ्नों से घबराकर जो जन कार्यारंभ नहीं करते हैं।
निम्न कोटि के वे नर होते, जीवित भी मरते हैं।।१।।

उत्साहित हो कठिन कार्य भी जो शुरू तो कर देते।
नहीं पूर्णता तक पहुँचाते वे मध्यम स्तर लेते।।२।।

विघ्नाहत हो-होकर भी जो प्रवर कार्य नहीं तजते हैं।
उत्तम स्तर के नर वे होते, लोग उन्हें भजते हैं।।३।।

गुरु तुलसी का पदारोह दिन आज विकास महोत्सव।
महाप्रज्ञ-अवदान शुभंकर, 'महाश्रमण' विनयोत्सव।।४।।

बढ़े मुंबई नगरी निशदिन, आध्यात्मिक उत्कर्ष दिशा में।
हो उत्थान भिक्षु-शासन का दिन में तथा निशा में।।५।।

लय : रे सुजना! भजत मुदा---

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
16 & 22 vDVwcj] 2023

भिक्षु चरमोत्सव पर पूज्यप्रवर के सान्निध्य में मुनिवृंद द्वारा समुच्चारित गीत

एक था वो संत धीर वीर औ महंत,
तंत, पंथ का न मोह, मस्ति में चला।
सर्वदा बसंत कंत घूमता निरंत,
क्या कहूँ भदंत था वो निर्मला।।

(१) कौन था वो कौन था, क्या तब समय भी मौन था, फिर क्यों नहीं उसे सभी पिछानते?
शम्भू था या ब्रह्मा था, वो चक्री था या बोस था, जो सब उसी की बात को स्वीकारते?
जो भी था वो चल बसा, क्यों खेद का न अंश वंश, सब उसी को आज फिर पुकारते,
जन्म में खुशी करे, यह सृष्टि का स्वरूप है, क्या मौत भी भला खुशी का पर्व है?
खो गई मती तुम्हारी, फिर गई गती तुम्हारी, उसकी मृत्यु पे भी तुमको बड़ा गर्व है।। कौन था वो संत--------

(२) शांत हो रे मानवी, ये छोड़ दे गुमानगी, मैं बोलता हूँ उसपे थोड़ा ध्यान दे,
दूत था वो शांति का ही, स्तूप था वो क्रांति का ही, उसका इनसे थोड़ा सा तू ज्ञान ले।
वो अमर सदा रहेगा, संघ भक्त हर कहेगा, सज्ज उसके लिए अपनी जान दे,
बोलता तो खोलता था, ज्ञान का पिटारा सारा, वृत्त है विचित्र मेरी मान ले।
क्रांति का इशारा लगता, सबको चौथा आरा प्यारा, उसका तू भी तो भले ही नाम ले।। एक था वो संत-------

(३) क्या जरूरी जानते हो, सारे-सारे मानवी की, था खुदा वो इंसा की बस्ती में,
विश्व की पुकार था वो, झूठ पे प्रहार था वो, या फंसा था वो किसी की कश्ति में।
जाना मैंने माना मैंने, घूमता रहा–रहेगा, वो सदा-सादा ही अपनी मस्ति में,
एक विचार, कर दो थोड़ा सा प्रसार, कैसा दिव्य-दिव्य-दिव्य था वो देवता।
मैं रटूँगा नाम मेरा, सिद्ध होगा काम कैसे, मैं भजू उसे अभी-अभी बता।। कौन था वो संत-------

(४) शौर्य से बटेर, वैर, गैर का वो जेर हो, या केर से करारी जिसकी वाण हो,
स्पष्ट निर्विकार, एक धार है विचार, चाहे जिस किसी का शास्त्र से प्रमाण लो।
धर्म है वो धर्म है, लगे नहीं जो कर्म है, तू मान भगवान की ये आण जो,
क्लेश हो न द्वेष हो, स्वर्थ का न लेश हो, संयमी को देना सच्चा दान है।
कर गुमान, लेके जान, नाम देना दान का, ये काम मोह कर्म का महान है।। एक था वो संत-------

(५) वाह-वाह, क्या प्रवाह, माफ होगी ये गुनाह, थोड़ा-थोड़ा जाना उस मुमुक्षु को,
नरेंद्र से-सुरेंद्र से, गणीन्द्र से-मुणीन्द्र से, प्रणम्य औ अदम्य उस समीक्षु को।
जाना-जाना तेरा गाना, माना-माना है पिछाना, महावीर महा वीर भिक्षु को,
इस हृदय की धड़कनों में, रक्त के कणों-कणों में, भिक्षु-भिक्षु नाम को बसाएँगे।
भिक्षु-भिक्षु गाएँगे, भिक्षु-भिक्षु ध्याएँगे, भिक्षुमय हम बन जाएँगे। एक था वो संत-------

(६) अखंड जोत, पुण्य पोत, साधना से ओत-प्रोत, वीर मार्ग स्रोत, भिक्षु स्वाम है,
जागती मशाल, तेज सूर्य सा है भाल, बेमिसाल, दीपालाल भिक्षु स्वाम है।
अथाह है प्रवाह, लाखों-लाखों की है चाह, मन मंदिर दरगाह, भिक्षु स्वाम है,
ये कवि की कल्पना, तो राई जितनी जल्पना है, सांस-सांस पे निवास स्वाम का।
उजास है–प्रकाश है, मिठास है–विकास है, ये तेरापंथ रूप भिक्षु नाम का।। एक था वो संत-------

(७) जिधर-किधर, इधर-उधर भी, देखो दृष्टि गाढ़कर, ये सारा-सारा भिक्षु का ही ठाठ है,
अचल, अमल, विमल, कमल, ये हम सभी का बल, सबल, देख लो ये भिक्षु का ही पाट है।
तरण, शरण, महाश्रमण, भिक्षु-भिक्षु संचरण, भिक्षु का ही रूप ये विराट है,
भिक्षु की पुकार आज, तेजस त्योहार भिक्षु, भक्तों अपनी भक्ति को जगाइए।
साधना के रास्ते, संघ के ही वास्ते, अपनी-अपनी शक्ति को लगाइए।। एक था वो संत-------

लय : आरंभ है प्रचण्ड---

अहिंसा दिवस की जड़ें हमारे...

(पृष्ठ २ का शेष)

अशोक चिंडालिया ने प्रेक्षा फाउंडेशन की प्रवृत्तियों की जानकारी दी। प्रेक्षा फाउंडेशन की ओर से अरविंद संचेती ने रिपोर्ट प्रस्तुत की। अध्यात्म साधना केंद्र से के०सी० जैन ने विचार रखे। प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कुमार श्रमण जी ने भी प्रेक्षाध्यान की संस्थाओं की प्रगति की जानकारी दी।

पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि प्रेक्षाध्यान से संबंधित सम्मेलन हो रहा है। जैन विश्व भारती प्रेक्षाध्यान का आधारभूत संस्थान रहा है। अणुव्रत न्यास के अंतर्गत अध्यात्म साधना केंद्र भी लंबे काल से ध्यान के विस्तार में लगी है। प्रेक्षा विश्व भारती में अनेक शिविर लगते रहते हैं। प्रेक्षा इंटरनेशनल भी अपनी गति से कार्य कर रही है। अगले वर्ष प्रेक्षाध्यान का ५०वाँ वर्ष स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में एक वर्ष तक आयोजन होने वाला है। साधना के साथ इसका आयोजन हो। २०२६-२७ में योगक्षेम वर्ष लाडनूं में होने जा रहा है। उस समय प्रेक्षाध्यान साधना का विशेष आयोजन हो। हमारा भी उस समय लंबा प्रवास रहेगा। क्षेत्र अनुसार भी शिविर आयोजित किया जा सकता है। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

प्राणियों को जीवन जीने में जीव-अजीव का भी सहयोग मिलता है : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ४ अक्टूबर, २०२३

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के चौथे दिवस पर्यावरण विशुद्धि दिवस पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि हमारी सृष्टि में जीव जगत भी है और अजीव जगत भी है। हमारी ये दुनिया जीव या अजीव के सिवाय कुछ नहीं है। प्राणी जीव जीते हैं। प्राणियों को जीवन जीने में जीव-अजीव का भी सहयोग मिलता है।

छः द्रव्यों का हमें हर पल सहयोग मिलता रहता है। प्रथम पाँच द्रव्य तो दूसरों को सहयोग देते हैं, पर जीव शेष पाँच द्रव्यों को सहयोग नहीं देता। जीवों का परस्पर अवलावन उपकार होता है। 'परस्परोपयोग जीवानाम्'। जीव जीव को ही सहयोग देता है। धरती पर तीन रत्न हैं–जल, अन्न और सुभाषितम्।

आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का चौथा दिवस पर्यावरण विशुद्धि दिवस है। डॉ० मुख्य मुनि महावीर कुमार जी का तो चिंतन रहा है–जैन आगम में पर्यावरण। अहिंसा, संयम और तप की बात आत्मशुद्धि के साथ पर्यावरण शुद्धि भी हो सकती है। दुनिया में मूल तत्त्व के रूप में पदार्थ तो उतने के ही उतने हैं। वैसे भी जीव भी जितने थे हैं, उतने ही हैं। उपभोक्ता जीवों की संख्या मोक्ष के संदर्भ में घटती है। संसारी जीवों की संख्या घटती रहती है तो फिर अव्यवहार राशि से जीव घटकर व्यवहार राशि में आते रहते हैं।

पेड़ों की सुरक्षा हो। पानी का अपव्यय न करें। इससे हिंसा से बचाव और पदार्थ का संयम हो सकता है। शास्त्र में वनस्पति और मनुष्य की तुलना की बात आती है। हरियाली का भी गृहस्थ अनावश्यक उपयोग न करें। पाँच स्थावर काय के जीव जो भौतिक भूत रूप में है, इन्हें जैन दर्शन में संजीव माना गया है, पर्यावरण के संदर्भ में भी इनकी अनावश्यक हिंसा न हो। पर्यावरण को दूषित करने से बचें।

नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम द्वारा पंच दिवसीय शिक्षक सप्ताह के तहत चतुर्थ दिवस केएलईएस निजलिंगप्पा फार्मेसी डिग्री कॉलेज, राजाजीनगर में कार्यरत शिक्षकों के लिए नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें संपूर्ण रक्त गणना, थायरॉयड जाँच एवं मधुमेह से संबंधित कुल १८ जाँचें समाहित की गई।

शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। कुल ६३ शिक्षकों ने अपनी जाँच करवाई। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने कॉलेज के प्रिंसिपल अरुण कुमार से वार्तालाप करते हुए एटीडीसी द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं से अवगत करवाते हुए शिविर आयोजन हेतु आभार व्यक्त किया। तेयुप सदस्यों ने सभी शिक्षकों को एटीडीसी द्वारा प्रदत्त सेवाएँ, डॉक्टर की उपलब्धता एवं अन्य जानकारी प्रदान की।

शिक्षकों ने धन्यवाद प्रेषित करते हुए आभार व्यक्त किया। प्रिंसिपल ने मानव सेवा के इस उपक्रम की सराहना करते हुए परिषद परिवार के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित की। आयोजन हेतु प्रायोजक के रूप में बद्रीलाल, सुखलाल पितलिया परिवार रहा।

शिविर के आयोजन करने में तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना, कमलेश चोरड़िया, राजेश देरासरिया, जयंतीलाल गांधी, ललित मुणोत, अजिंक्या चौधरी, चेतन मांडोत एवं हरीश पोरवाड़ का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

जयाचार्य निर्वाण दिवस

उदयपुर।

जयाचार्य तेरापंथ धर्मसंघ के एक ऐसे आचार्य थे जिनसे अपने व्यक्तित्व, कर्तृत्व एवं प्रज्ञा से तेरापंथ की नींव को स्थिरता प्रदान की। जयाचार्य ने मेवाड़ में पहला चातुर्मास नाथद्वारा में करके पूरे मेवाड़ में अपना प्रभाव जमाया। सिरियारी में जयाचार्य ने विघ्न हरण की ढाल की रचना की। जयाचार्य आत्मार्थी संत थे, उनका भाग्य बहुत तेज था। आज के दिन जयपुर में समाधी स्थल पर निर्वाण दिवस मनाया जाता है।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने जयाचार्य के बचपन के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु का निर्वाण और जयाचार्य का जन्म मात्र एक माह का अंतर रहा। उन्हें सात वर्ष में दीक्षा की भावना हो गई थी। ३ भाई, माता और भुआ कुल मिलाकर ५ दीक्षा हुई। मुनि भीमराज जी और मुनि स्वरूपचंद जी आपके बड़े भाई थे। मुनि संबोध कुमार जी ने मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का संचालन किया।

F गुरु ज्ञानदाता होते हैं। वे संस्कार भरते हैं, अनुशासन करते हैं। जिनसे कुछ प्राप्त हुआ, उनके नाम को छिपाएँ क्यों?

–आचार्य श्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

नवयुवती परिचय कार्यशाला का आयोजन

रोहिणी, दिल्ली।

उत्तरी दिल्ली महिला मंडल द्वारा अभातेममं की चार योजनाओं में से स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज के अंतर्गत शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी एवं शासनश्री साध्वी ललितप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में नवयुवती परिचय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ पूनम सुराणा द्वारा मंगलाचरण से किया गया। तत्पश्चात नवयुवतियों का परिचय सत्र हुआ। अध्यक्ष मधु सेठिया द्वारा सभी बहनों का स्वागत किया गया।

अभातेमम चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी ने कहा कि परिवार हमारा धरातल है, इससे जुड़े रहकर परंपरा का निर्वाह करते हुए हमें आधुनिक जीवन जीना चाहिए। उन्होंने युवतियों से प्रश्न भी किया आधुनिकता हमें क्यों पसंद है?

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी द्वारा मंगल उद्‌बोधन दिया गया, उन्होंने बताया कि अपनी संस्कृति से जुड़े रहने का प्रयत्न करना चाहिए। सहमंत्री प्रवीणा सिंघी ने रोचक धार्मिक प्रतियोगिता करवाई। ६१ नवयुवती बहनें संभागी बनी। मंच का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री इंदिरा सुराणा ने किया।

उड़ान ज्ञान गगन में

मुंबई।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आयोजित नंदनवन परिसर में आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य और साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी की प्रेरणा से, चातुर्मास में मुंबई महिला मंडल के लिए चल रही कार्यशाला 'उड़ान ज्ञान गगन में' सात सत्र अब तक हो चुके हैं। जिसमें बहनों ने अब तक हुए सत्र में साध्वीश्रीजी द्वारा बहुत ही सरल भाषा और सहज शैली में जैन धर्म और तेरापंथ के मूल सिद्धांतों के बारे में बहनों ने क्या-क्या सीखा और उनके जीवन में कितना, क्या परिवर्तन हुआ, यह बताया। सभी मोटिवेटिंग और इनफॉर्मेटिव कार्यशाला में साध्वी डॉ० रिद्धिप्रभा जी, साध्वी सिद्धार्थप्रभा जी, साध्वी चारित्रयशा जी, साध्वी मधुस्मिताजी, साध्वी दीप्तियशा जी और साध्वी प्रबुद्धयशा जी का प्रेरणा पाथेय रहा।

महिला मंडल, मुंबई के मंत्री संगीता चपलोत, कार्यसमिति सदस्य सुमन सिंघी व विशेष सहयोगी अल्का पटावरी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। हर कार्यशाला के अंत में साध्वीश्री जी ने बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी की प्रेरणा से यह कार्यशालाएँ निरंतर आयोजित होती रहें। महिला मंडल, मुंबई की अध्यक्षा विमला कोठारी, अभातेमम ट्रस्टी प्रकाश देवी तातेड़, सहमंत्री सरिता ढालावत, संगठन मंत्री कांता बच्छावत आदि बहनों की उपस्थिति रही।

द पावर ऑफ सब-कॉन्सियस माइंड कार्यशाला का आयोजन

जोरावरपुरा।

अभातेमम के निर्देशन में महिला मंडल द्वारा 'द पॉवर ऑफ सब-कॉन्सियस माइंड' कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें महिला मंडल द्वारा नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत के साथ कार्यशाला की शुरुआत की गई। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ० मधुकर जैन रहे। महिला मंडल मंत्री मोनिका बुच्चा ने संचालन करते हुए बताया कि हमें किस प्रकार अपने अवचेतन मन में पॉजिटिविटी भरकर हमारे लक्ष्य को प्राप्त करना है। डॉ० मधुकर जैन ने बताया कि मन शब्द की उत्पत्ति कब हुई। कुछ कविता के माध्यम से बताया कि आपके जीवन के चालक आप खुद हैं। आपके अंदर की सोच ही आपकी पॉजिटिविटी कम करती है। हमें लक्ष्य प्राप्त करना अर्थात हमारा अपने आपके प्रति पूर्ण समर्पण।

चाचा नेहरू स्कूल की बालिकाएँ एवं प्रशिक्षिकाएँ भी इस कार्यक्रम में उपस्थित रही। मोहनलाल बुच्चा ने अपने भाव रखे। महिला मंडल अध्यक्ष शकुंतला मरोठी ने सबका स्वागत किया। कार्यक्रम में लगभग १२० भाई-बहनों की उपस्थिति रही। चाचा नेहरू स्कूल से प्रशिक्षिका नीतू चौधरी ने अपने विचार रखे।

पचपदरा।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में 'द पॉवर ऑफ सब-कॉन्सियश माइंड' कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वी पुण्यदर्शनाजी ने कहा कि हमारे अंदर शक्ति का भंडार है। बस उस पर विश्वास करके जागृत करने का प्रयास करना चाहिए। साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने कहा कि हम सब कुछ हासिल कर सकते हैं, बस जरूरत है विश्वास करने की क्योंकि हम जैसा डालेंगे वैसा ही पाएँगे। साध्वी रोशनीप्रभा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्तत किए।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी ने कहा कि हम अनंत गुणों के खजाने हैं, उसको खोलने के लिए ध्यान व अनुप्रेक्षा का प्रयोग करके प्राप्त कर सकते हैं। पिंकी ढेलड़िया ने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ व संयोजन अंजली चौपड़ा ने किया।

तिरुपुर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित 'द पावर ऑफ सब-कॉन्सियस माइंड' शिल्पशाला का आयोजन तेमम द्वारा साध्वी डॉ० गवेषणाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में किया गया। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया। अध्यक्षा नीता सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। साध्वी दक्षप्रभा जी ने मधुर गीत का संगान किया।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने बताया कि सब-कॉन्सियस माइंड की पावर बहुत अधिक और अद्‌भुत है। अगर अपना लक्ष्य निर्धारित कर लें और अपने अवचेतन मन तक पहुँचा दें, तो हम निश्चित रूप से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि चेतन मन हमारे पूरे मन का १० प्रतिशत होता है, अवचेतन मन हमारे मन का ९० प्रतिशत भाग होता है। यह अत्यधिक पावरफुल होता है। यह आपकी पूरी जिंदगी बदल सकता है।

अनुप्रेक्षा के सिद्धांत को अपनाएँ एवं अवचेतन मन में कोई भी नेगेटिव बात न जाने दें। अनेक छोटे-छोटे उदाहरणों द्वारा साध्वीश्री जी ने अवचेतन मन की उपयोगिता को समझाया। कार्यक्रम का संचालन रेखा सिंघवी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

कालू।

तेरापंथ भवन में साध्वी उज्ज्वलरेखा जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार 'द पावर ऑफ सब-कॉन्सियस' कार्यशाला रखी गई। सरल शब्दों में कहा जाए तो 'अचेतन मन की शक्ति'। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल के द्वारा मंगलाचरण के साथ की गई। साध्वीश्री जी ने कहा कि अवचेतन मन की शक्ति इतनी अधिक है कि वो अपनी पूरी जिंदगी बदल सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति सदैव सकारात्मक सोच रखे। सकारात्मक सोच हमारे अवचेतन मन को और अधिक सकारात्मकता प्रदान करती है, जिससे व्यक्ति का जीवन सदैव प्रगति पर चलता रहता है।

कार्यशाला का संचालन रेणु बोथरा ने किया। जागृति भदानी ने अचेतन मन के बारे में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए बताया कि व्यक्ति अपनी सकारात्मक सोच से, अपने सकारात्मक व्यवहार से अपने अचेतन मन को और अधिक ऊर्जान्वित कर सकता है। साथ ही योग साधना के महत्त्व को बताते हुए अपनी चेतनाओं पर नियंत्रण पाने का आसान रास्ता भी बताया।

बोरावड़।

प्रेक्षाध्यान दिवस के अवसर पर साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में तेमम, बोरावड़ द्वारा अभातेमम निर्देशित कार्यशाला 'द पावर ऑफ सब-कॉन्सियस माइंड का आयोजन हुआ।

साध्वीश्री जी के मंगल पाठ के उच्चारण से प्रारंभ हुई कार्यशाला का मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया। महिला मंडल मंत्री सुमन लुनिया ने प्रेक्षाध्यान के महत्त्व पर अपने विचार रखे।

साध्वीश्री जी ने अपने उद्‌बोधन में रोचक तरीके से बताया कि प्रेक्षाध्यान द्वारा सब-कॉन्सियस माइंड को किस प्रकार जागृत किया जा सकता है। साध्वीश्री जी ने बताया कि सब-कॉन्सियस माइंड को अगर नियंत्रित कर लिया जाए तो व्यक्ति बड़ी-से-बड़ी सफलता हासिल कर सकता है। प्रेक्षाध्यान को जीवन का अंग बना व्यक्ति जीवन में शांति पा सकता है।

नारी लोक के वाचन के साथ आभार ज्ञापन कन्या मंडल प्रभारी भारती कोटेचा ने किया। कार्यक्रम में परिषद के भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

अखंड जाप का आयोजन

उधना।

अभातेमम के निर्देशानुसार भिक्षु चरमोत्सव आराधना के अंतर्गत महिला मंडल द्वारा मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में मुनि अनंत कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। गीतिका का संगान रखा गया। जिसमें ६७ बहनों की उपस्थिति रही। इसके उपरांत महिला मंडल, उधना द्वारा 'ॐ भिक्षु एवं जय भिक्षु' का अखंड जाप का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें लगभग २१३ बहनों ने सामायिक के साथ 'ॐ भिक्षु' का जप किया।

भिक्षु चरमोत्सव का आयोजन

मदुरै।

अभातेमम द्वारा निर्देशित भिक्षु चरमोत्सव का जाप तेरापंथ भवन में कया गया। जिसमें महिलाओं ने 'भिक्ष म्हारे प्रगटया जी' का संगान निर्धारित समय सामायिक और संवर के साथ जाप को पूरा किया। अनेक भाई-बहनों के उपवास, एकाशन, पौषध और आयंबिल थे।

पुनरावर्तन पुरानी ढालों का

टिटिलागढ़।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम द्वारा पाँचों पुरानी ढालों की प्रतियोगिता रखी गई। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मंडल की अध्यक्षा बॉबी जैन ने सभी प्रतियोगी बहनों का स्वागत किया। अध्यक्ष बॉबी जैन ने पाँचों ढालों से २५ प्रश्न तैयार किए थे तथा प्रतियोगिता की अच्छी तैयारी कर रखी थी। बहनों ने पूरे उत्साह के साथ प्रतियोगिता में भाग लिया।

प्रतियोगिता के बाद बहनों ने ढालों का संगान भी किया। प्रतियोगिता में आठ बहनों ने भाग लिया। कृष्णा जैन ने प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए बहनों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

जीवन में करें भगवती अहिंसा की...

(पृष्ठ २ का शेष)

अणुव्रत का ७५वाँ वर्ष चल रहा है। अहिंसा आदमी के भावों में और व्यवहार में रहे। छोटे-छोटे जीवों की हिंसा से बचें। किसी प्राणी को हमारे से कष्ट न पड़े। हमारी जीवनशैली में अहिंसा आ जाए। गृहस्थ मांसाहार का प्रयोग न करे। हम जीवन में अहिंसा भगवती की आराधना करें।

अहिंसा शांति देने वाली होती है। 'जय हे! जय जीवन दाता' गीत का सुमधुर संगान करवाया। अहिंसा को आगम में भगवती नाम से उपमित किया गया है। गुरुदेव तुलसी जिन्होंने अनेकों यात्राएँ की थीं, उन्होंने अणुव्रत आंदोलन शुरू किया था। हम अणुव्रत के अनुरूप जीवन जीएँ।

अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष प्रो० रघुनाथ पांडे ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि सम्यक् को पुष्ट रखने का प्रयास हो, उसे रूष्ट न होने दें।

क्षमा सागर में डुबकियाँ लगाने का पर्व है पर्युषण महापर्व

नोखा।

पर्युषण महापर्व में महास्नान के प्रमुख दिन संवत्सरी महापर्व के दिन शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने कहा कि संवत्सरी के दिन ३ चीजें साधु अपने पास न रखें–केश, क्लेश और आहार। संवत्सरी महापर्व क्षमा के सागर में गोते लगाने का पर्व है। पर्युषण महापर्व की आराधना नोखावासियों ने बड़े उत्साह-उमंग के साथ साध्वीश्री जी की सन्निधि में की। उससे पूर्व सावण से ही तपस्या की झड़ी यहाँ लग गई। शासन गौरव की प्रेरणा से ३ मासखमण, ३ पखवाड़े, १३ की एक, ११ की तीन, ८ अठाइयाँ, ५ पचरंगी, ४ सोलिया, १० एकांतर तप हुए।

खाद्य संयम दिवस : खाद्य संयम दिवस पर शासन गौरव साध्वीश्री जी ने तपस्या की प्रेरणा के साथ-साथ ऊनोदरी तप की महत्ता बताते हुए कहा कि यह एक ऐसा तप है जो हर व्यक्ति कर सकता है और यह स्वास्थ्य हेतु भी बहुत लाभकारी है। पर्युषण क्या? क्यों? कैसे? पर भी साध्वीश्री जी ने प्रकाश डाला। साध्वी कुसुमप्रभा जी ने अशन और अनशन पर अपने विचार रखे। साध्वी पुलकितयशा जी ने गीत का संगान किया। युवती मंडल ने मंगलाचरण किया।

स्वाध्याय दिवस : मुख्य प्रवचन के दौरान श्रावक के ४ प्रकार साध्वीश्री जी ने बताए–जो पुराने त्याग निभाते हैं। पुराने छोड़ते, नए लेते हैं। पुराने भी रखते हैं, नए भी ग्रहण करते हैं। दोनों ही नहीं रखते। त्याग के साथ ३ चीजें होनी चाहिए–विवेक, त्याग लेते समय एक रस हो इसकी निष्पत्ति है–अनासक्ति। व्रत से हल्कापन आए। कर्मों का हल्कापन, मन का हल्कापन। पर्युषण में चिंतन करना भी स्वाध्याय है। साध्वी विधिप्रभा जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। मंगलाचरण महिला मंडल ने किया।

सामायिक दिवस : तेयुप के तत्त्वावधान में अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। एक जैसे गणवेश में पंक्तिबद्ध श्रावक-श्राविकाओं का वह दृश्य मन को शासन गौरव साध्वीश्री जी ने दान, शील, तप, भावना का महत्त्व तथा मोक्ष मार्ग के साधन के रूप में इसकी विस्तृत व्याख्या की। मंगलाचरण महिला मंडल ने किया।

वाणी संयम दिवस : मुख्य प्रवचन में साध्वीश्री जी ने बताया कि ५ बातों में आदमी को सजग रहना चाहिए–परिवार, पैसा, प्रतिष्ठा, पत्नी और पानी। इनके प्रति सजगता कैसे बरती जाए, उसका भी विवेचन करते हुए मौन की पचरंगी की प्रेरणा साध्वीश्री जी ने दी। साध्वी पुलकितयशा जी ने नुपुर और घर के उदाहरण द्वारा मौन का महत्त्व समझाया। मंगलाचरण युवती मंडल ने किया।

अणुव्रत चेतना दिवस : अणुव्रत दिवस पर 'अणुव्रत संकल्प पत्र' भरने की प्रेरणा देते हुए शासन गौरव साध्वीश्री जी ने अणुव्रत की शुरुआत आचार्य तुलसी एवं अन्य साधु-साध्वियों की श्रम गाथाएँ भी आज की पीढ़ी के सामने प्रस्तुत की। साध्वी विधिप्रभा जी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। मंगलाचरण जोरावरपुर महिला मंडल ने किया। शासन गौरव साध्वीश्री जी ने गणधरवाद की चर्चा भी की।

जप दिवस : अपने मुख्य प्रवचन में शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने भावों की तरतमता की व्याख्या की। पहले जो कर्म बंधन हुआ उसकी स्थिति पूरी हो गई तो वे हल्के हो जाएँगे। पानी को गर्म करते हैं तो पूरा पानी एक साथ गर्म नहीं होता पहले सबसे नीचे वाली परत फिर उसके ऊपर और ऐसे करते-करते पूरा पानी गर्म होगा। वैसे ही निमित्त जैसा मिलेगा वैसे ही कर्म हल्के हो जाएँगे। साध्वीश्री जी ने जप की साधना की बात कही। मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा कियागया।

ध्यान दिवस : ध्यान दिवस पर साध्वीश्री जी ने ध्यान के कुछ छोटे-छोटे प्रभावी प्रयोग बताए।ध्यान में वो ताकत है जो दो मिनट भी यदि पवित्रता के साथ किया जाए तो बेले जितने कर्म कट सकते हैं। ज्ञान हो या न हो पर मोक्ष चाहिए तो ध्यान आवश्यक है। साध्वी पुलकितयशा जी ने ध्यान दिवस पर गीत का संगान किया। मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा किया गया।

इस अष्टदिवसीय महायज्ञ में सभी ने अपनी पूर्ण आहूति दी। अखंड जप का क्रम सभा भवन में चला। रात्रि में साध्वियों द्वारा इतिहास के विविध प्रसंगों की प्रस्तुति दी गई। जोरावरपुरा में भी श्रावकों ने उल्लास के साथ क्षमा के इस महान पर्व की आराधना की। संवत्सरी के दिन वहाँ लगभग ५१ पौषध हुए। इन सबके साथ-साथ दो बहनों के वर्षीतप की तपस्या भी चल रही है।

पर्युषण महापर्व पर भाई-बहनों, युवकों की उपस्थिति सराहनीय रही। सभा अध्यक्ष निर्मल भूरा, मंत्री लाभचंद छाजेड़, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी, मंत्री प्रीति मरोठी, तेयुप के मंत्री अरिहंत सकलेचा, किशोर मंडल संयोजक अमन आंचलिया आदि कार्यक्रम व्यवस्था व संयोजन में सक्रिय रहे।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

k	vHkkrs;qi izoa/k eaMy l=k & 2019&2021	51]00]000
k	Jh cPNkor ifjokj] ljnkj'kgj&t;iqj	5]00]000
k	Jh clar vfiZr ukgj] egsanzx<+&m/kuk	5]00]000
k	Jh jkds'k dBksfr;k] ykMuwa&eqacbZ	5]00]000
k	Jh :ipan ckSMkey tSulq[k nqxM+] chnklj&eqacbZ	5]00]000
k	Jh 'kkafryky ikjley ndmejh] m/kuk&lwjr	5]00]000
k	Jh loefrpan xksBh] ljnkj'kgj&eqacbZ	5]00]000
k	Jh fofiu tSu ikj[k] fljlk&eqacbZ	5]00]000
k	Jh jktdqekj xkSre izlkn tSu] csyikM+k&mM+hlk	5]00]000
k	Jh lkxjey nhid foey deys'k Jheky] nsox<+&cM+kSnk	5]00]000
k	Jh tSulq[k nhid cksFkjk] Nkij&flyhxqM+h	5]00]000
k	Jh clar uoy[kk] chdkusj	5]00]000
k	Jh foey pksiM+k] xaxk'kgj&;equkuxj	5]00]000
k	J)kfu'B Jkodo ds'kjhey] vfuydqekj] lat;dqekj] lquhydqekj paMkfy;k ¼xaxkiqj½ lwjr	5]00]000
k	Jh NÙkjey x.ks'key fouhrdqekj cSn] jktyns lj&psUubZ	5]00]000

laLd`frcklaj{k.k&laLdkjksadk lao)ZutSufof/k&vewY;fuf/k

नामकरण संस्कार

टॉलीगंज।

राजलदेसर निवासी, टॉलीगंज प्रवासी प्रवीण-स्वाति बैद के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक एवं उपासक महेंद्र दुगड़ ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान के साथ किया गया। बैद परिवार की ओर से उपासक खींवकरण बैद ने तेयुप, टॉलीगंज के प्रति आभार ज्ञापित किया। परिषद के अध्यक्ष अनुज बागरेचा ने शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए बैद एवं बेगवानी परिवार को साधुवाद देते हुए आभार ज्ञापन किया।

साउथ हावड़ा।

राजगढ़ निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी मोहित-दिव्या बैद के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनोज कोचर एवं पवन बेंगानी ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा संपादित करवाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। संस्कारकों ने पारिवारिकजनों को मंगलभावना पत्रक भेंट किया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। अध्यक्ष गगनदीप बैद ने परिषद की ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित की। पारिवारिक जनों ने परिषद के प्रति आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

विजयनगर।

बीदासर निवासी, बैंगलोर प्रवासी ऋषभ एवं पुत्रवधू वर्षा बैंगानी के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक राकेश दुधोड़िया, श्रेयांस गोलछा ने विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

परिषद द्वारा बैंगानी परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया गया। बैंगानी परिवार ने तेयुप, विजयनगर का आभार व्यक्त किया। जैन संस्कारक श्रेयांस गोलछा ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

विजयनगर।

सुजानगढ़ निवासी, बैंगलोर प्रवासी राजकुमार छाजेड़ के प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विकास बांठिया एवं पवन बैद ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। पारिवारिकजनों ने जैन संस्कार विधि की सराहना की एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापन किया।

समण संस्कृति संकाय परीक्षा का आयोजन

पालघर।

समण संस्कृति संकाय जैन विश्व भारती, लाडनूं के तत्त्वावधान में केंद्र व्यवस्थापक सुखलाल तलेसरा, सह-केंद्र व्यवस्थापक दिनेश राठोड़ के निर्देशन में ऑफ लाइन भाग ५ से ८ परीक्षा का आयोजन किया गया। सभा अध्यक्ष देवीलाल सिंघवी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से परीक्षा-सत्र प्रारंभ किया गया। आपकी उपस्थिति में परीक्षा पेपर खोले गए। इस परीक्षा में ३१ परीक्षार्थियों की उपस्थिति रही। सुव्यवस्थित परीक्षा-सत्र की व्यवस्था की गई।

भाग १ से ४ व संयुक्त भाग की ऑन लाइन परीक्षा में २६ परीक्षार्थी सहभागी हुए। परीक्षा सानंद संपन्नता के पश्चात केंद्र व्यवस्थापक द्वारा संकाय के नियमानुसार उत्तर पुस्तिका की जाँच-पड़ताल की गई व लिफाफा पेक किया गया। परीक्षा केंद्र, पालघर केंद्र व्यवस्थापक के रूप में सुखलाल तलेसरा ३४ साल से सेवारत हैं।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
/ 16 & 22 vDVwcj] 2023

F वे व्यक्ति धन्य हैं, कृतपुण्य हैं, जिनके मन में सत्य के प्रति आकर्षण होता है, जो असत्य से बचने का प्रयास करते हैं।
–आचार्यश्री महाश्रमण

संयम की चेतना का पर्व - महापर्व पर्युषण

सुनाम।

साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की आराधना का शुभारंभ हुआ। सात दिवसीय अखंड जप अनुष्ठान की शुरुआत ११ जोड़े के सहित हुई।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि संयम की आराधना का महापर्व है–पर्युषण। पर्युषण पर्व हम सबके भीतर धर्म का दीप प्रज्वलित करने की प्रेरणा लेकर आता है। उसकी रोशनी से मन-मंदिर को पवित्र बनाया जाता है। भोग से त्याग की ओर, असंयम से संयम की ओर, राग से विराग की ओर प्रस्थान करने के लिए पर्युषण महापर्व की आराधना की जाती है।

खाद्य संयम दिवस : युवती मंडल से लीना, प्रिया व पायल ने सुमधुर स्वर लहरी से मंगलाचरण किया। साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि खाद्य संयम के साथ विशेष रूप से इंद्रिय मन पर संयम करें। हित-मित-सात्त्विक आहार का सेवन करने से हमारी विचार, व्यवहार व आचार भी सात्त्विक बनते हैं। साध्वी केवलप्रभा जी ने अपने विचार रखे।

स्वाध्याय दिवस : साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि आत्म-दर्शन का दर्पण है–स्वाध्याय। स्वाध्याय आत्मा पर जमी हुई कालिमा को दूर कर आत्मा को पवित्र बनाया जा सकता है। लब्धियों, सिद्धियों के साथ स्वाध्याय, आत्मविद्या का ज्ञान करवाता है। साध्वीवृंद ने साध्वीश्री जी द्वारा रचित गीत का संगान किया।

सामायिक दिवस : अभिनव सामायिक की शुरुआत त्रिपदी वंदना के साथ हुई। साध्वी केवलप्रभा जी ने क्रमबद्ध सामायिक अनुष्ठान का प्रयोग करवाया। साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि सामायिक का अर्थ है–समता का अभ्यास। असंतुलित जीवनशैली को संतुलित बनाने का सुंदर उपकरण है–सामायिक। साध्वीवृंद ने सुमधुर स्वर लहरी से वातावरण को संगीतमय बना दिया। लगभग ८३ सामायिक हुई।

मौन दिवस : तीर्थंकर स्तुति के साथ साध्वी गुणप्रेक्षाजी, साध्वी केवलप्रभा जी, साध्वी हेमंतप्रभाजी ने कार्यक्रम का आरंभ किया। भगवान महावीर की सरस भव-परंपरा की रोचक प्रस्तुति देते हुए साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि सामाजिक संबंधों का आईना है वाणी, इसमें बहुत बड़ी शक्ति है इसलिए अनावश्यक न बोलें, हितकारी, प्रिय व मधुर बोलें। साध्वी संवरविभा जी ने अपने विचार रखे।

पायल जैन ने संचालन किया। महिला मंडल से मंजु भावना और रेनू ने मौन दिवस पर गीत का संगान किया। रात्रि में महावीर अंत्याक्षरी कार्यक्रम हुआ।

अणुव्रत चेतना दिवस : साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर मानव को मानवता की राह दिखाई। मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा कर राष्ट्रीय चरित्र के ग्राफ को ऊँचा उठाने में प्रयास किया। महिला मंडल अध्यक्ष सुनीता और साथ में भावना पुष्पा जैन ने अणुव्रत गीत का संगान किया। साध्वी संवरविभा जी ने संचालन किया।

जप दिवस : महावीर स्तुति के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि शक्ति जागरण का विशिष्ट प्रयोग है–जप। साधक जप की साधना से सुरक्षा कवच का निर्माण करता है। कन्या मंडल ने गीत का संगान किया। उपासिका सोना जैन ने अक्षर जप की व्याख्या की। संचालन मंत्री प्रिया जैन ने किया।

ध्यान दिवस : साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि बाह्य यात्रा से हटकर अंतर्यात्रा करने का नाम है–ध्यान। आज आम आदमी टेंशन से भरा हुआ है, इससे निजात पाने के लिए गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान का आयाम देकर संपूर्ण मानव जाति को जीने की कला सिखाई। अगले चरण में एकासन, मासखमण मनसा जैन व पर्युषण में एकासन करने वालों की तप अनुमोदना की गई। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

संवत्सरी महापर्व : साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि अध्यात्म की चेतना को जगाने वाला यह महापर्व संवत्सरी का पावन दिन आया है। साध्वीश्री जी ने संवत्सरी महापर्व को मनाने की परंपरा का विस्तार से वर्णन किया। साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान किया। इससे पूर्व साध्वी गुणप्रेक्षाजी ने आर्षवाणी का श्रवण करवाया।

पर्युषण काल में नमस्कार महामंत्र का अखंड जाप, सामायिक, मौन पचरंगी, व्रत-अनुष्ठान, पौषध व्रत की आराधना में ४५ भाई-बहनों की सहभागिता रही। सायंकालीन प्रतिक्रमण में श्रद्धालुओं की सराहनीय उपस्थिति रही।

मैत्री दिवस : साध्वीश्री जी ने मैत्री पर्व पर सबको आह्वान करते मैत्री, प्रेम और करुणा भाव से पारस्परिक व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया। राग-द्वेष की ग्रंथि का भेदन कर आपस में क्षमायाचना करें। क्षमायाचना केवल वाचिक ही न रहे। कार्यक्रम की सफलता में सभा परिषद व महिला मंडल सभी का सहयोग रहा।

दीक्षार्थी धनराज बैद का मंगलभावना समारोह

पीतमपुरा, दिल्ली।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने मंगलभावना समारोह में मुमुक्षु धनराज बैद को संबोधित करते हुए कहा–यह आचारांग सूत्र की अर्हत वाणी है। आप क्षण-क्षण साधना में जागरूक रहते हुए इसका पूर्णतः पालन करना। इसके साथ-साथ गुरु चरणों में सर्वात्मना समर्पित रहना। मोह विजय की साधना में पूर्णतः सफल होना। संघीय मर्यादाओं का अक्षरशः पालन करना। रत्नाधिक संतों का सम्मान करना। संघ के गौरव को सदा-सदा सुरक्षित रखना। यही मेरी मंगलकामना है।

शासनश्री साध्वी सुव्रतां जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने एक प्रेरक सूत्र दिया था–'रहें भीतर जीएँ बाहर'। आपने लंबे समय तक घर में रहते हुए प्रतिमा की साधना करते हुए इस प्रेरक सूत्र को हृदयंगम किया अब भविष्य के लिए और अधिकाधिक आत्मरमण करना है।

शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने राजा श्रेणिक और भगवान महावीर प्रसंग प्रस्तुत किया। धनराज जी के चेहरे पर प्रसन्नता टपक रही है। शब्द-शब्द में 'अहो सुखं अहोसुखं' की ध्वनि निकल रही है। यह त्याग-तपस्या का प्रभाव है।

इस समारोह का शुभारंभ महिला मंडल के संगान से हुआ। पीतमपुरा सभा के अध्यक्ष प्रवीण जैन ने विभिन्न स्थानों से पधारे हुए आगंतुकों का सम्मान किया एवं दीक्षार्थी के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। शालीमार बाग सभा मंत्री अनिरुद्ध जैन, तेयुप संगठन मंत्री जिनेश जैन, तेममं उत्तरी दिल्ली अध्यक्ष मधु जैन, पश्चिमी दिल्ली रीटा चोरड़िया, अणुव्रत समिति, दिल्ली अध्यक्ष मनोज जैन, अणुव्रत ट्रस्ट के पूर्व मंत्री अरुण संचेती, अणुव्रत पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक संचेती, तेरापंथी सभा, दिल्ली उपाध्यक्ष विमल बैंगानी, तेरापंथ महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, तेरापंथ सभा, दिल्ली पूर्व मंत्री डालिमचंद बैद, प्रीतमपुरा खिलौनी देवी धर्मशाला परिवार से राकेश जैन ने दीक्षार्थी का अभिनंदन किया एवं मंगलभावना प्रस्तुत की।

साध्वी कार्तिकप्रभा जी एवं साध्वी चिंतनप्रभा जी ने गीत प्रस्तुत किया। अंत में मुमुक्षु धनराज बैद ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे सिर पर साध्वी रतनश्री जी का एवं साध्वी सुव्रतांजी का बहुत उपकार है। आपने मुझे दीक्षा के लिए प्रेरित किया एवं साधु प्रतिक्रमण सिखाया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मेरे पर अनुग्रह की वर्षा की है। जो ढलती आयु में मुझको दीक्षा प्रदान कर रहे हैं।

उपस्थित सभी श्रावक-श्राविकाओं से मैं शुद्ध अंतःकरण से क्षमायाचना करता हूँ। आपसे नम्र निवेदन है, जितनी बन सके उतनी धर्मसंघ की सेवा करें, बड़े सौभाग्य से यह नंदनवन शासन आपको मिला है। इसका पूरा-पूरा लाभ उठाएँ। सभी संस्था के पदाधिकारियों द्वारा माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेंद्र मालू ने किया।

कृष्णा नगर, दिल्ली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी धनराज बैद का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि धनराज बैद स्वनाम धन्य व्यक्ति हैं। आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की तरह आचार्यश्री महाश्रमण जी की भी आप पर विशेष कृपा है। इसी का सुपरिणाम है कि ७७ वर्ष की अवस्था में दीक्षा की आज्ञा मिली है। धनराज धनवान, विद्वान, श्रद्धावान श्रावक हैं। वर्षों से आप साधनामय जीवन जी रहे हैं और अभी पड़िमा करके सबको आश्चर्यचकित कर दिया। आप भी दीक्षित होकर गुरुदृष्टि की आराधना करते हुए अपने जीवन को धन्य बनाएँ। इस अवसर पर मुनिश्री ने गीत बनाकर धनराजजी के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

धनराजजी ने अपने गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी, आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति अपने श्रद्धा भाव व्यक्त करते हुए मुनि कमल कुमार जी के प्रति श्रद्धा भाव प्रकट किए। जनसमूह को रात्रि भोजन परिहार और ६ जमीकंद त्यागने की प्रेरणा दी। ६ व्यक्तियों ने रात्रि भोजन का जीवन पर्यन्त त्याग कर आपकी भावना का सम्मान किया।

इस अवसर पर मुनि अमन कुमार जी, मुनि नमि कुमार जी, सभाध्यक्ष कमल गांधी, उपासक मनीष छल्लाणी, तेयुप सहमंत्री शिवम छल्लाणी, पुखराज डागा, धर्मचंद श्यामसुखा, राकेश बैद, सुशीला सिपानी, राज गुनेचा आदि ने भी अपने भावों द्वारा मंगलभावना व्यक्त की। समाज के वयोवृद्ध श्रद्धालु भाइयों ने धनराजजी का साहित्य और त्याग से सम्मान किया।

आचार्य भिक्षु चरमोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

पीतमपुरा, दिल्ली।

आचार्य भिक्षु फौलादी संकल्प के धनी थे। उनके पास सत्य, संयम, श्रद्धा और सिद्धांतों का अटूट बल था। उनको विचलित करने के लिए अनेक अवरोध आए, भूचाल और तूफान आए पर वे अपने लक्ष्य से एक इंच भी इधर-उधर नहीं हुए। अवरोध अपने आप टूटकर चकनाचूर हो गए।

अपने अंतिम समय में अनशन का स्वीकरण किया। स्वर्गारोहण के समय १०८ गाँव के लोग लोग सम्मिलित हुए। सिंहवृत्ति से साधुत्व स्वीकार किया और सिंहवृत्ति से अपने शरीर का विसर्जन किया। ये विचार शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने भिक्षु चरमोत्सव के संदर्भ में व्यक्त किए।

शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने कहा कि भिक्षु नाम बड़ा चामत्कारिक है। श्रद्धा के साथ स्मरण करने से अनेकानेक समस्याओं से मुक्ति मिल जाती है। आज के दिन सहस्रों लोग उपवासी बनकर भिक्षु चरणों में अपना अर्घ्य चढ़ाते हैं। धर्मम जागरणा के द्वारा भिक्षु की यशो-गाथाओं का संकीर्तन करते हैं।

शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु विराट व्यक्तित्व के धनी थे। संघर्षों की आग में जल-जल कर अपने जीवन को स्वर्ण की तरह चमकाया।

साध्वी चिंतनप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु पंचाचार ज्ञान-दर्शन, चारित्र, तप एवं वीर्य में संपन्न आचार्य थे। उन्होंने आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन करके ३८ हजार पद्यों की संरचना की। वे भगवान महावीर के सक्षम प्रतिनिधि थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ संपतमल घीया ने मंगल गीत से किया। खिलौनी देवी धर्मशाला परिवार की तर्क से राकेश ने भिक्षु अभिवंदना की वीरेंद्र जैन, तेरापंथ पीतमपुरा सभा की उपाध्यक्षा मनफूल देवी, तेरापंथ महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने भिक्षु चरणों में श्रद्धा सुमन समर्पित किए। शालीमार बाग तेरापंथी सभा की अध्यक्षा सज्जनदेवी ने अपने आराध्य की स्वतना की।

कार्यक्रम का संयोजन कार्तिकप्रभा जी ने किया। रात्रि में धर्म जागरणा का आयोजन दिन में १२ घंटे ॐ भिक्षु का अखंड जाप हुआ। उपवास अच्छी संख्या में हुए।

असली घर में रमण करने का महापर्व है -पर्युषण

शाहदरा, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में पर्युषण महापर्व का कार्यक्रम समायोजित हुआ।

खाद्य संयम दिवस : साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि पर्युषण महापर्व आत्मा की आराधना, अर्हत की उपासना एवं समता की साधना का महापर्व है। इस महापर्व पर संयम, तप, त्याग से आत्मा को भावित करना है। संयम जीवन का परम धर्म है। हमारे शरीर की स्वस्थता संयम पर निर्भर करती है। वह संयम है–खान-पान का संयम। खाद्य संयम हर दृष्टि से उपयोगी है।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि चिर यौवन के लिए, शरीर की स्वस्थता के लिए, सौंदर्य को बरकरार रखने के लिए वैद्य श्रेष्ठ अश्विनी कुमार ने आंवले का प्रयोग बताया। वो आंवला है संयम का। खान-पान का संयम रखने वाला चिर युवा रह सकता है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि पर्युषण महापर्व आठ कर्मो को निर्जरण करने का उत्तम अवसर है। साध्वी समत्वयशाजी ने आगम वाणी का रसपान करवाया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

मंगल संगान विश्वास नगर व भोलानाथ नगर की बहनों ने किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में साध्वी अणिमाश्री जी ने श्राविका तुलसी बाई के तपोमय जीवन की झांकी प्रस्तुत की। हर्षा नाहटा ने मंगल संगान किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समत्वयशा जी ने किया।

स्वाध्याय दिवस : स्वाध्याय दिवस पर साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि दुनिया में दो प्रकार के शब्द प्रचलित हैं–पदार्थाराम व आत्माराम। जिसकी चेतना आत्मा में रमण करती है वह आत्माराम है। यह समय आत्माराम का समय है। आत्माराम की दिशा को प्रशस्त करने का सशक्त माध्यम है–पर्युषण।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने विचार व्यक्त किए। साध्वी समत्वयशा जी ने आगमवाणी से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। मंगल गान रामनगर, नवीन शाहदरा, यमुना विहार, शाहदरा, दिलशाद गार्डन, भारत सिटी की बहनों ने किया। डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने ऐतिहासिक घटना के माध्यम से स्वभाव परिवर्तन की बात कही। तेयुप, दिल्ली के सदस्यों ने मंगल संगान किया। संचालन साध्वी कर्णिकाश्री जी ने किया।

सामायिक दिवस : सामायिक दिवस पर तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा की उपस्थिति रही।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि अध्यात्म का पहला पड़ाव है–सामायिक। आवेश व आवेग पर नियंत्रण की संजीवनी है–सामायिक। सामायिक समता की साधना का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। साध्वीश्री जी ने कहा कि पंकज डागा ने अभातेयुप में नई लकीरें खींची हैं, नया इतिहास बनाया है।

अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा ने कहा कि यह समय धर्म की उत्कृष्ट साधना का अनुपम अवसर है। आज के इस अद्भुत नजारे का देखकर मैं अभिभूत हूँ। साध्वी अणिमाश्री जी जहाँ भी जाती हैं, नई लकीरें खींचती हैं, नए कीर्तिमान बनाती हैं। दिल्ली में भी नई अलख जगाई है।

साध्वी समत्वयशा जी ने अभिनव सामायिक के प्रयोग करवाए। साध्वी सुधाप्रभा जी ने विचार रखे। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने संचालन किया।

वाणी संयम दिवस : वाणी संयम दिवस पर साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि सुखमय, शांतिमय, आनंदमय जीवन का राजमार्ग है–वाणी संयम। रिश्तों में पड़ी दरारों को दूर करने का माध्यम है–वाणी संयम।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि जीवन को बांस नहीं बांसुरी बनाएँ। बांसुरी बनाने के लिए मीठा बोलें, ऊँची भाषा बोलें, गर्वरहित बोलें एवं अनावश्यक न बोलें।

साध्वी समत्वयशा जी ने आगम गाथा के आधार पर चित्रण किया। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच संचालन किया। झिलमिल, सूरजमल विहार, रामविहार, लक्ष्मीनगर व प्रीत विहार की बहनों ने कार्यक्रम में मंगलाचरण किया।

अणुव्रत चेतना दिवस : साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने इस मानव धर्म की परिकल्पना की। उन्होंने देश की आजादी के साथ 'असली आजादी अपनाओ' का घोष दिया। साध्वीश्री जी ने कहा कि जैन समाज व्यसन की गिरफ्त में आ रहा है। हमें अपनी संस्कृति का पहरेदार बनना है।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंच संचालन किया। साध्वी समत्वयशा जी ने विचार व्यक्त किए। बृहविहार, चंदननगर, वैशाली, वसुंधरा, रामप्रस्था ग्रीन, निपुण वैली सोसायटी की बहनों ने गीत का संगान किया।

अणुव्रत विश्व भारती के महामंत्री भीखमचंद सुराणा ने विचार व्यक्त किए। अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली व अणुव्रत समिति, गाजियाबाद के सदस्यों ने अणुव्रत गीत की प्रस्तुति दी।

जप दिवस : साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आत्म-साक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ाने का अमोघ साधन है–जप। आत्म-संपदा को अभिवर्धित करने का उपाय है–जप। अध्यात्म की शक्ति से रूबरू होने का आलंबन है–जप। विवेक विहार, श्रेष्ठ विहार, विज्ञान लोक व विज्ञान विहार की बहनों ने सुमधुर गीत का संगान किया।

ध्यान दिवस : साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि ध्यान जिन की खोज एवं जिन की पहचान का पथ है। जिसने खुद को जान लिया और आत्मज्ञान की दिशा में ध्यानस्थ हो गए, उसने सब कुछ जान लिया, सब कुछ पा लिया। ध्यान के द्वारा भीतर को स्वच्छ को स्वच्छ बनाने का प्रयत्न करें, तभी ध्यान दिवस मनाने की सार्थकता होगी।

संवत्सरी एवं मैत्री दिवस : संवत्सरी एवं खमतखामणा का कार्यक्रम हर्षोल्लास संपन्न हुआ। लगभग चालीस भाई-बहनों ने पर्युषण के दौरान अठाई एवं इससे ऊपर की तपस्याएँ की। तेरह मंदिरमार्गी भाई-बहनों ने भी भवन में आकर सामुहिक अठाई का प्रत्याख्यान किया। सैकड़ों भाई-बहनों ने पौषध की आराधना की।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि संवत्सरी महापर्व आत्मावलोकन का महापर्व है। ऋजुता व मृदुता का महापर्व है। आत्मानंद के पथ पर अग्रसर होने का महापर्व है।

खमतखामणा के पुनीत पर्व पर साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि जीवन की मनहर बगिया को अमृतरस का सिंचन देकर कण-कण को पुलकित करने का नाम है–खमतखामणा। खमतखामणा महापर्व से पूरी परिषद को नया संबोध मिले, मंगलकामना।

साध्वीश्री जी ने पूज्यप्रवर, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी सहित सभी चारित्रात्माओं से खमतखामणा किया। दिल्ली में विराजित सभी चारित्रात्माओं से खमतखामणा किया। पूरी परिषद से सरल हृदय से खमतखामणा किया। संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज ने भी साध्वीश्री जी एवं साध्वीवृंद से खमतखामणा किया।

खमतखामणा के दिन शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, मंत्री राजेंद्र सिंघी, दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, दिल्ली तेयुप अध्यक्ष विकास चोरड़िया, पूर्वी दिल्ली तेममं अध्यक्ष सरोज सिपानी, गाजियाबाद सभा सहमंत्री महेंद्र घीया, राकेश खटेड़ ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद ने किया।

पर्युषण साधना शिविर का आयोजन

शाहदरा में पहली बार साध्वी अणिमाश्री जी एवं साध्वीवृंद की प्रेरणा से पर्युषण साधना शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में लगभग शताधिक भाई-बहनों ने भाग लिया। शिविर का संचालन राकेश खटेड़ ने किया। राकेश खटेड़ ने शिविर साधकों को विशेष प्रशिक्षण एवं ध्यान साधना के प्रयोग करवाए। साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने शिविर में विभिन्न विधाओं में प्रशिक्षण दिया।

साध्वी अणिमाश्री जी की सन्निधि में मध्याह्न में शिविर साधकों ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि यह शिविर हमारे जीवन का अविस्मरणीय पल था। सात दिन का समय कैसे बीता, पता ही नहीं चला। ऐसे शिविर हर पर्युषण में लगने चाहिए।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

सिकंदराबाद।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेयुप के आयोजक्त्व में एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान आनंद, शांति और संतुष्टि की साधना है। स्वभाव परिवर्तन का अमोघ उपाय है। प्रेक्षा शब्द भगवान है, साहित्य में प्राप्त होता है। आचारांग में विपश्यना और पेहा शब्दों का उल्लेख मिलता है। प्रेक्षाध्यान प्रयोग करने के लिए इच्छुक-जन विदेशों से भी भारत आते हैं। साध्वीश्री जी ने कहा कि हर व्यक्ति को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करने चाहिए। ध्यान में प्रवेश का पहला प्रयोग, पहला दरवाजा श्वास दर्शन है। प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण लेना चाहे, वे पहले इसकी साधना करे। प्रेक्षा फाउंडेशन के द्वारा शिविरों का आयोजन होता है। प्रेक्षावाहिनी का हैदराबाद में नियमित व्यवस्थित क्रम चलना चाहिए।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी द्वारा मंगलभावना का प्रयोग करवाया गया। साध्वीवृंद ने प्रेक्षाध्यान गीत का सामुहिक संगान किया। तेयुप के अध्यक्ष निर्मल दुगड़ ने संपूर्ण परिषद को भावपूर्ण आत्मिक स्वागत प्रस्तुत करते हुए कहा कि साध्वीश्री जी की समय-समय पर विशेष प्रेरणा प्रदान की जाती है। श्रावक समाज के लिए एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन कर विशेष अनुग्रह किया है। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने परिषद को प्रेक्षाध्यान के विशेष प्रयोग करवाए।

साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने प्रेक्षा सिद्धांत प्रशिक्षण दिया, जिसमें ध्वनि विज्ञान, मुद्राविज्ञान आदि की जानकारी दी। साध्वी राजुलप्रभा जी ने वृहद कायोत्सर्ग करवाया। प्रेक्षा प्रशिक्षक ललित मिश्रा एवं बबीता संचेती ने शिविरार्थियों को आसन, प्राणायाम, एक्युप्रेशर आदि प्रयोग करवाए। तेयुप के अध्यक्ष निर्मल एवं उनकी पूरी टीम ने एकजुट होकर इस शिविर को सफल बनाया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, टीपीएफ, अणुव्रत समिति, किशोर मंडल के सदस्य इस शिविर में प्रतिभागी रहे। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के मंत्री सुशील संचेती, परामर्शक लक्ष्मीपत बैद, अणुव्रत समिति की मंत्री रीटा सुराणा आदि उपस्थित रही।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

भीलोड़ा।

तेरापंथी उपसभा, भीलोड़ा द्वारा प्रेक्षाध्यान दिवस पर प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन महावीर भवन में किया गया। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का आगाज हुआ। कार्यक्रम में आए सभी श्रावक समाज का उपसभा अध्यक्ष महावीर चावत द्वारा स्वागत किया गया। विकेश दक द्वारा प्रेक्षाध्यान के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की गई एवं प्रेक्षाध्यान करवाया गया।

इस कार्यक्रम में श्रावक समाज से कुल ७ सदस्य उपस्थित रहे एवं सभी ने संकल्प लिया कि हम रोज सुबह २० मिनट प्रेक्षाध्यान अवश्य करेंगे। आभार ज्ञापन उपसभा मंत्री बाबूलाल दक द्वारा किया गया।

उपासना

(भाग - एक)

आचार्य महाश्रमण

पर्युषण पर्व

संवत्सरी पर्व को कैसे जीएँ?

प्रतिवर्ष संवत्सरी पर्व आता है और अपनी आध्यात्मिक ज्योति-किरणों को बिखेर कर चला जाता है। मनुष्य उन ज्योति-किरणों से कितना प्रभावित होता है? उनका प्रभाव कब तक और कितना रहता है? वह अल्पकालिक होता है या दीर्घकालिक? ये ऐसे प्रश्न हैं, जो सांवत्सरिक पर्व में आस्था रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति से समाधान चाहते हैं। कोई इनका उत्तर दे या न भी दे, पर कई बार अनुत्तरित उत्तर भी सबके उत्तर बन जाते हैं। जब तक व्यक्ति का चित्त निर्मल नहीं होता, भीतर की चेतना में कोई रूपांतरण नहीं होता, अपने स्वार्थों को नहीं छोड़ा जाता और अलोभ-अनासक्ति का लाभ किसी को नहीं मिलता तो मानना चाहिए पर्व आया और चला गया। उसका कोई विशेष लाभ नहीं मिला। पर्व जीवन को बदलने का महान उपक्रम है। वह जीवन को निर्मलता के प्रकाश और ज्योति से भरने वाला दीपस्तंभ है। यदि दीपस्तंभ के पास रहकर भी जीवन ज्योतिर्मय नहीं बनता है, जीवन का रूपांतरण नहीं होता है तो समझना चाहिए कि हमने पर्व को मनाया तो बहुत है पर उसे जीने का प्रयास नहीं किया।

स्वाध्याय

प्रश्न किया गया–**'सज्झाएणं भंते! जीवे किं जणयइ?'** स्वाध्याय करने से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया–**'सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।'** स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है।

हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है–ज्ञान। जिस आदमी में ज्ञान का अभाव होता है, वह एक प्रकार से अंधा होता है। अंधे आदमी के लिए जैसे बहुत सारी चीजें अज्ञात रह जाती हैं, वैसे ही आदमी के ज्ञान पर जब आवरण आया हुआ होता है तब वह जान नहीं पाता। जैन कर्मवाद के अनुसार आठ कर्मों में पहला कर्म है–ज्ञानावरणीय कर्म। यह हमारे ज्ञान को आवृत्त करता है। जिस प्रकार आँख पर पट्टी लगा लेने से दिखाई नहीं देता, उसी प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म का उदय हो जाने से आदमी जान नहीं पाता। आदमी का यह लक्ष्य रहे कि जीवन में ज्ञान का विकास हो और ज्ञान का विकास तब होता है जब ज्ञानावरणीय कर्म कमजोर पड़ता है। ज्ञानावरणीय कर्म को हलका या कमजोर करने का एक उपाय है–स्वाध्याय। प्राकृत भाषा में इसे सज्झायं कहा जाता है। यह स्व और अध्याय दो शब्दों से बना है। अपना अध्ययन करना, अपने बारे में जानना स्वाध्याय है। स्वाध्याय का सीधा संबंध आत्मा के साथ है। आत्मा के बारे में जान लेने का मतलब है अध्यात्म के बारे में जान लेना। अध्यात्म को जानने के लिए आध्यात्मिक विषयों का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन स्वाध्याय का एक प्रकार है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार इस प्रकार भी व्याख्या की जा सकती है–**'सुष्ठु अध्यायः इति स्वाध्यायः'** अच्छी तरह सर्वांगीण रूप में अध्ययन करना स्वाध्याय है। पढ़ना-पढ़ाना आदि स्वाध्याय के अंग हैं। पठन-पाठन से अज्ञान का आवरण पतला पड़ता है अथवा उसमें छिद्र हो जाते हैं, जिससे ज्ञान की रश्मियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

ज्ञान-प्राप्ति के लिए विद्यालय बने हुए हैं। चूँकि हम लोग पदयात्रा करते हैं इसलिए बहुधा विद्यालयों में हमारा प्रवास होता है। जगह-जगह विद्यालयों की विपुलता है। छोटे-छोटे गाँवों में भी विद्यालय मिलते हैं। सरकार भी शिक्षा के प्रति जागरूक है। गरीब बच्चों को भी शिक्षा का मौका मिले, उसके लिए भी सरकार सचेष्ट है और शिक्षा की व्यवस्था कर रही है। अज्ञान के कारण आदमी अनेक रूढ़ियों को पकड़ लेता है और गलत काम भी कर लेता है। शिक्षा का विकास होने से अज्ञान जनित समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वाध्याय का वैशिष्ट्य माना गया। साधक के लिए स्वाध्याय एक प्रकार का अमृत है। उसका एक कार्य है–दूसरों को ज्ञान देना। जब तक साधक स्वयं स्वाध्याय नहीं करेगा, शास्त्रों आदि को नहीं पढ़ेगा, तब तक उसका ज्ञान विकसित नहीं होगा और जब उसका स्वयं का ज्ञान विकसित नहीं होता है तब वह दूसरों को ज्ञान क्या और कैसे दे पाएगा? उत्तराध्ययन सूत्र के छब्बीसवें अध्ययन में कहा गया है–

पुच्छेज्जा पंजलिउडो, किं कायव्वं मए इहं?
इच्छं निओइउं भंते!, वेयावच्चे व सज्झाए।।

प्रातःकाल गुरु को वंदन कर शिष्य गुरु से पूछे–गुरुदेव! आज आप मुझे किस कार्य में नियोजित करना चाहेंगे? मेरे सामने दो कार्य हैं–सेवा और स्वाध्याय। आपकी आज्ञा हो तो मैं वृद्ध, ग्लान आदि साधुओं की सेवा करूँ। आपकी आज्ञा हो तो मैं स्वाध्याय करूँ। जैसा आपका निर्देश होगा, मैं वही कार्य करूँगा। सेवा भी महत्त्वपूर्ण कार्य है और स्वाध्याय का भी अपना महत्त्व है। संस्कृत साहित्य में कहा गया–**'स्वाध्यात् मा प्रमद'** स्वाध्याय में कभी प्रमाद मत करो, स्वाध्याय करते रहो। स्वाध्याय को सर्वोत्तम माना गया। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि स्वाध्याय करने से ज्ञान मिलता है। ज्ञान प्राप्त कर आदमी सही आचार का पालन कर सकता है। ज्ञान ही नहीं होगा तो आचार का पालन कैसे होगा? ज्ञान है तो जीवन में अहिंसा आ जाएगी, ईमानदारी आ पाएगी और संयम आ पाएगा, किंतु ज्ञान सम्यक् होना चाहिए। सम्यक् ज्ञान का एक बड़ा आधार बनता है–स्वाध्याय। इसीलिए स्वाध्याय को सर्वोत्तम तप कहा गया होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

ज्ञान लौकिक भी हो सकता है और अलौकिक यानी आध्यात्मिक भी हो सकता है। अध्यात्मविद्या के संदर्भ में ज्ञान के बारे में कहा गया–

जेण तच्चं विबुज्झेज्ज, जेण चित्तं णिरुज्झदि।
जेण अता विसुज्झेज्ज, तं णाणं जिणसासणे।।

जिससे तत्त्व का बोध होता है, चित्त का निरोध होता है, आत्मा विशुद्ध होती है, उसे जिनशासन में ज्ञान कहा गया है। ज्ञान प्राप्त करने की मन में तड़प होनी चाहिए। ज्ञान प्राप्त करना भी तपस्या है, साधना है, तड़प हो तो उसे वृद्धावस्था में भी प्राप्त किया जा सकता है। हमारे धर्मसंघ के उच्चकोटि के वरिष्ठ मुनि श्री मगनलाल जी स्वामी (मंत्री मुनि) प्रौढ़ अवस्था में थे। गुरुदेव तुलसी की कुछ प्रेरणा मिली, उन्होंने प्रयास किया और उत्तराध्ययन सूत्र के अनेक अध्ययन कंठस्थ कर लिए। हालाँकि बचपन में जितनी आसानी से कंठस्थ हो सकता है, वृद्धावस्था में थोड़ी कठिनाई तो हो सकती है किंतु पुरुषार्थ हो और बुद्धि हो तो कुछ याद किया जा सकता है। हमारे यहाँ साधु संस्था में कंठस्थ करने की परंपरा रही है। हजारों-हजारों श्लोक स्मरण कर लिए जाते हैं। कुछ परिश्रम किया जाए तो ज्ञान का विकास हो सकता है। किसी भाषा को सीखना है तो कुछ पुरुषार्थ करना होगा। पहले उस भाषा की व्याकरण को सीखना होगा, साहित्य को पढ़ना होगा, तब कहीं उस भाषा का अच्छा बोध हो सकता है। संस्कृत साहित्य में कहा गया–

विना व्याकरणेनान्धः, बधिरः कोशवर्जितः।
साहित्यरहितः पंगुः, मूकस्तर्कविवर्जितः।।

किसी भाषा पर अधिकार प्राप्त करना है तो व्याकरण का ज्ञान अच्छी तरह करना होगा, तब प्रकाश मिलेगा। अगर व्याकरण का ज्ञान नहीं है तो भाषा की दृष्टि से उस आदमी को अंधा माना गया है। व्याकरण से आँखें खुलती हैं। जिस आदमी के पास शब्द भंडार नहीं होता है, वह आदमी बहरा होता है। क्योंकि जब कोई आदमी भाषण देगा तो वह नए-नए शब्दों का प्रयोग करेगा। यदि श्रोता को शब्दों का ज्ञान नहीं होगा तो उसके लिए उन शब्दों को सुनना और न सुनना प्रायः समान होगा। इसलिए शब्द भंडार के बिना आदमी को बहरा बताया गया है। जिसकी साहित्य में गति नहीं होती, वह भाषा की दृष्टि से पंगु होता है और जिसके पास तर्क बल नहीं होता, वह सुन लेता है किंतु प्रश्न नहीं उठा सकता। इसलिए उसे मूक कहा गया है। परिश्रम करने से आदमी किसी भी भाषा को आत्मसात् कर सकता है, शास्त्रों की गहराई में भी जा सकता है। जिसकी ज्ञान के प्रति रुचि नहीं होती, वह कैसे और कितना ज्ञान का विकास कर सकेगा?

पूज्य गुरुदेव तुलसी बड़े ज्ञानी पुरुष थे, शास्त्रों के वेत्ता थे, कई भाषाओं के वेत्ता थे। उन्होंने कितने-कितने शिष्यों को ज्ञान का दान दिया। एक बार उन्होंने साधुओं की सभा में फरमाया था कि तुम लोगों को तत्त्वज्ञान का विकास करना चाहिए। हम लोग हमेशा तुम्हारे सामने नहीं रहेंगे। आखिर स्वयं को ज्ञान का विकास करना चाहिए। अपना ज्ञान ज्यादा काम आता है। दूसरों के भरोसे ज्यादा नहीं रहना चाहिए। ज्ञान के बिना आदमी सद्‌गुणों से वंचित भी रह सकता है, अपना नुकसान भी कर सकता है, इसलिए व्यक्ति ज्ञान प्राप्ति के लिए अध्यवसाय युक्त बने। मात्र साधु-साध्वियों को ही नहीं, गृहस्थों को भी आध्यात्मिक ज्ञान का विकास करना चाहिए। आजकल तो ज्ञान प्राप्ति की बहुत सुलभता है, इतना साहित्य, इतनी अनुकूल साधन-सामग्री उपलब्ध है और इंटरनेट आदि के माध्यम से भी ज्ञान आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी स्थितियों में समय का कुछ उपयोग यथासंभव ज्ञानात्मक विकास में भी करना चाहिए। ताकि जीवन में कुछ प्राप्त हो सके। जिसके पास ज्ञान नहीं होता, उसके सामने कठिनाई पैदा हो सकती है। हमारे धर्मसंघ में बड़े नामी और ज्ञानी संत हुए हैं–मुनिश्री घासीरामजी स्वामी। उनके जीवन का एक प्रसंग है। वे जब वैरागी अवस्था में थे, तब पूज्य गुरुदेव कालूगणी के दर्शन करने सुजानगढ़ गए। वहाँ के लोढ़ा परिवार ने उनको भोजन के लिए आमंत्रित किया। भोजन में उनको संभवतः खीर परोसी गई। उस खीर के ऊपर बादाम, पिस्ता आदि के पतले टुकड़े करके डाले गए थे। वैरागीजी ने खीर नहीं खाई। लोगों ने कहा–वैरागीजी, खीर खाइए। वैरागीजी ने कहा–खीर कैसे खाऊँ? इसके ऊपर तो कितनी लटें तैर रही हैं। वे मेवाड़ के एक गाँव दिवेर के रहने वाले थे। उस जमाने में शायद मेवाड़ में खाद्य पदार्थों का इतना विकास नहीं हुआ होगा। तभी उनके लिए अज्ञात बात थी कि ऐसा भी कोई खाद्य पदार्थ होता है। ज्ञान के अभाव में पौष्टिक चीजें भी उनके लिए लटें बन गईं।

(क्रमशः)

संबोधि

q आचार्य महाप्रज्ञ q

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

(६) **निरोधः कर्मणामस्ति, संवरो निर्जरा तथा।**
कर्मणां प्रक्षयश्चैषोपादेयदृष्टिरिष्यते।।

कर्मों का निरोध करना संवर है और कर्मों के क्षय से होने वाली आत्मशुद्धि निर्जरा है–यह उपादेयदृष्टि है।

साधना-पथ पर अग्रसर होने से पूर्व साधक के लिए यह जानना जरूरी है कि वह क्यों इस मार्ग का चुनाव कर रहा है? पहले या पीछे यह विवेक किए बिना साधना का शुभारंभ फलदायी नहीं होता। सामान्य जन भी बिना किसी उद्देश्य के प्रवृत्त नहीं होते। दिशाहीन गति का कोई अर्थ नहीं रहता। हेय, ज्ञेय और उपादेय–इस तत्त्वत्रयी का बोध साधक को भटकने नहीं देता। वह सतत ध्येय की दिशा में बढ़ता रहता है।

जो जानने का है उसे जानें, छोड़ने का है उसे छोड़ें और जो उपादेय है उसके ग्रहण में संलग्न रहे। अकुशल प्रवृत्तियों से बचना, जो हैं उन्हें हटाना और कुशल प्रवृत्ति की संरक्षा करना तथा जो नहीं है वह कैसे संप्राप्त हो इसमें सचेष्ट रहना। साधना का यह प्रथम चरण है। इसलिए जितने भी साधक हुए हैं उन्होंने अशुभ से बचने का प्रथम सूत्र दिया है। महावीर ने कहा है–'सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णा फला, दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णा फला–अच्छे कर्मों का अच्छा फल और बुरे कर्मों का बुरा फल होता है। अंगुत्तर निकाय में बुद्ध ने कहा है–भिक्षुओ! जैसा बीज बोता है वैसा ही फल पाता है। अच्छा कर्म करने वाला अच्छा फल पाता है और बुरा कर्म करने वाला बुरा। भिक्षुओ! जिसकी दृष्टि मिथ्या होती है, संकल्प मिथ्या होते हैं, वाणी, कर्मान्त, आजीविका, व्यायाम, स्मृति, समाधि, ज्ञान तथा विमुक्ति मिथ्या होती है, उसके कारण उसका शारीरिक, वाचिक तथा मानसिक–सभी कर्म अनिष्ट दुःख के लिए होते हैं, क्योंकि उसकी दृष्टि ही बुरी होती है।

पुण्य, पाप, आश्रव और बंध हेय हैं, क्योंकि इनका कार्य संसार है। पुण्य का फल अच्छा है, किंतु अच्छा होने से संसार-विच्छेद नहीं होता। निर्वाण की अपेक्षा वह हेय है। पुण्य और पाप दोनों से मुक्त होना है। सुख-वेदन या दुःख-वेदन दोनों का क्षय करना है। संवर, निर्जरा और मोक्ष उपादेय हैं। मोक्ष की उपादेयता निर्बाध है। क्योंकि वहाँ पुण्य-पाप दोनों ही नहीं हैं। वह भव का अंत है। संवर और निर्जरा मोक्ष की पृष्ठभूमि का काम करते हैं। साधक एक साथ निर्वाण को उपलब्ध नहीं कर सकता। संवर-निर्जरा की क्रमिक साधना निर्वाण को निकट करती है। उपयोगिता की दृष्टि से इनका विवेक कर योग-मार्ग में आरूढ़ होना चाहिए।

(७) **अमूढं आत्मगं चित्तं, योगो योगिभिरिष्यते।**
मनोगुप्तिः समाधिश्च, साम्यं सामायिकं तथा।।

जो चित्त आत्म-लीन एवं अमूढ़-मूर्च्छाग्रस्त नहीं है, उसे योगी योग कहते हैं। मनोगुप्ति, समाधि, साम्य और सामायिक–ये सब योग के ही रूप हैं।

(८) **ऐकाग्र्यं मनसश्चाद्ये, भवेच्चान्ते निरोधनम्।**
मनःसमितिगुप्त्योश्च, सर्वो योगो विलीयते।।

ध्यान की दो अवस्थाएँ होती हैं। एकाग्रता और निरोध। प्रारंभिक दशा में मन की एकाग्रता होती है और अंतिम अवस्था में उसका निरोध होता है। मन की समिति–सम्यक् प्रवर्तन और मन की गुप्ति–निरोध में सारा योग समा जाता है।

(९) **मोक्षेण योजनाद् योगः, समाधिर्योग इष्यते।**
स तपो विद्यते द्वैधा, बाह्येनाभ्यन्तरेण च।।

जो आत्मा को मोक्ष से जोड़े, वह योग कहलाता है। आत्मा और मोक्ष का संबंध समाधि से होता है इसलिए समाधि को योग कहा जाता है। योग तप है। उसके दो भेद हैं–बाह्य तप और आभ्यंतर तप।

(१०) **चतुर्विधस्याहारस्य, त्यागोऽनशनमुच्यते।**
आहारस्याल्पतामाहुः, अवमौदर्यमुत्तमम्।।

अन्न, पानी, खाद्य-मेवा आदि, स्वाद्य-लवंग आदि–इस चार प्रकार के आहार के त्याग को अनशन कहते हैं। आहार, पानी की अल्पता करने को अवमौदर्य-ऊनोदरिका कहते हैं।

(११) **अभिग्रहो हि वृत्तीनां, वृत्तिसंक्षेप इष्यते।**
भवेद् रसपरित्यागो, रसादीनां विसर्जनम्।।

वृत्ति-आजीविका के लिए अभिग्रह-प्रतिज्ञा करने को वृत्ति-संक्षेप कहते हैं। घी, तेल, दूध, दही, चीनी और मिठाई–इन विकृतियों के त्याग करने को रस-परित्याग कहते हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

q मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' q

कर्म बोध

बंध व विविध

प्रश्न २ : कर्म रूपी या अरूपी, जीव या अजीव?
उत्तर : कर्म रूपी व अजीव है।

प्रश्न ३ : आत्म प्रदेश अधिक हैं या कर्म प्रदेश?
उत्तर : आत्म प्रदेश से कर्म प्रदेश अधिक हैं। आत्म प्रदेश असंख्य हैं जबकि कर्म की वर्गणाएँ अनंत हैं। एक-एक कर्म वर्गणा के अनंत-अनंत प्रदेश हैं।

प्रश्न ४ : निर्जरित कर्म वर्गणा चतुःस्पर्शी ही रहती है या अष्टस्पर्शी भी हो सकती है?
उत्तर : निर्जरण होने के बाद कर्म कर्म-वर्गणा के रूप में नहीं रहते, वे केवल पुद्गल रह जाते हैं। वे चतुःस्पर्शी रहकर भी भाषा, मन आदि में प्रयुक्त हो सकते हैं। आहारक, वैक्रिय, तैजस् आदि अष्टस्पर्शी पुद्गल में भी परिणत हो सकते हैं। वे द्विस्पर्शी परमाणु भी बन सकते हैं और पुनः कर्म रूप में भी परिवर्तित हो सकते हैं।

प्रश्न ५ : कर्मबंध का मुख्य हेतु क्या है?
उत्तर : कर्मबंध का मुख्य हेतु आश्रव है। ये पाँच हैं–मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय व योग। कर्मबंध के हेतुओं का यह एक संक्षिप्त वर्णन है। विस्तार में आठ ही कर्मों के बंध के पृथक्-पृथक् कारण बतलाए गए हैं।

प्रश्न ६ : जीव वध से संबंधित कितनी क्रियाएँ हैं?
उत्तर : जीव वध से संबंधित क्रियाएँ मुख्य रूप से पाँच प्रकार की बतलाई गई हैं–
(१) कायिकी – हिंसा आदि में प्रवृत्त काया की क्रिया।
(२) आधिकरणिकी – शरीर आदि का शस्त्र रूप में प्रयोग करने से होने वाली क्रिया।
(३) प्रादेषिकी – प्रद्वेष (कषाय) से होने वाली क्रिया।
(४) पारितापनिकी – परिताप-कष्ट पहुँचाने से होने वाली क्रिया।
(५) प्राणातिपात क्रिया – प्राणों का अतिपात-समाप्त करने से होने वाली क्रिया।

प्रश्न ७ : जीव के कितनी क्रियाएँ होती हैं?
उत्तर : जीव कोई भी असत्-क्रिया करता है, तो उसके न्यूनतम प्रथम तीन क्रिया अवश्य होती है। कदाचित् पारितापनिकी के साथ चार व प्राणातिपात क्रिया के साथ पाँच क्रिया भी हो सकती है।

प्रश्न ८ : कर्म रूपी आत्मा अरूपी है। रूपी व अरूपी का संबंध कैसे संभव है?
उत्तर : अनादिकाल से संसारी आत्मा कार्मण शरीर से निरंतर संबंधित है। इस दृष्टि से जीव को कथंचित् रूपी माना गया है। रूपी जीव के साथ रूपी कर्म पुद्गलों के चिपकने में कोई विसंगति नहीं है।

(क्रमशः)

आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के आयोजन

सिरियारी

अतिशायी आभा के धनी, अनगिन प्रेरणाओं के पुरस्कर्ता, अदम्य इच्छा-शक्ति के स्वामी, प्रत्सत्मन्न मेधा के धारक, कई जन्मों के योगी जिनके सामने घेर विरोधी भी झुकते चले गए, जिन्होंने जीवन जीया तो ऐसा जीया कि लाखों-लाखों के जीने की वजह बन गए और मृत्यु वरी तो ऐसी वरी कि उनका मरण भी एक उत्सव बन गया। ऐसे थे आचार्यश्री भिक्षु। प्रत्येक सुदी तेरस को समधी स्थल में एक मेला-सा लग जाता है। देश-विदेश से हजारों भक्तगण समाधी दर्शन के लिए आते हैं। जैन-अजैन सभी इसके लिए उत्सुक रहते हैं।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पूरी रात चलने वाली भजन संध्या और उसमें भी मिलने वाला संतों का सान्निध्य। किंतु तेरस के एक दो दिन पहले से ही श्रद्धालुगण अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने लग जाते हैं।

प्रख्यात गायक-गायिकाओं ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। कमल सेठिया, निलेश बाफना, राहूल बालड़, अपेक्षा पामेचा, डाकलिया बंधु आदि अनेक कलाकारों ने कार्यक्रम में उपस्थिति दर्ज की। शासनश्री मुनि मणिलाल जी स्वामी ने गीत की प्रस्तुति दी। मुनि आकाश कुमार जी ने अपनी कवित्व शैली में जनता का मन मोहा। मुनि हितेंद्र कुमार जी ने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन पन्नालाल पुगलिया ने किया।

पचपदरा

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन पचपदरा के तत्त्वावधान में आचार्यश्री भिक्षु चरमोत्सव का आयोजन हुआ। साध्वी पुण्यदर्शनाजी ने इस अवसर पर आचार्यश्री भिक्षु के प्रेरक प्रसंग से लाभान्वित किया। साध्वीवृंद ने गीत के द्वारा आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। शासनश्री साध्वी सत्यवती जी ने कहा कि किस प्रकार आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ की सुदृढ़ नींव लगाकर संघ को आश्वस्त किया और प्रथम आचार्य से लेकर वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन छत्रछाया में तेरापंथ जैसे अलबेले शासन में हम सब फल-फूल रहे हैं।

महिला मंडल अध्यक्ष भाग्यवंती चौपड़ा ने भी अपने भाव व्यक्त किए। रात्रिकालीन कार्यक्रम में धम्म जागरणा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री ललिता चौपड़ा ने किया और मंगलाचरण सोहन छाजेड़ ने किया।

तिरुपुर

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में भिक्षु चरमोत्सव मनाया गया। मंगलाचरण उपासिका संजू दुगड़ द्वारा किया गया। भिक्षु बाबा को सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया, प्रमोद सिंघवी, योगेश कोठारी, प्रकाश दुगड़, प्रीति भंडारी, मधु झाबक आदि ने अपनी भावांजलि अर्पित की। शाहदा से समागत दिलीप गेलड़ा ने अपने भाव रखे। कन्या मंडल से ज्योति सुराणा एवं पायल कोठारी ने गीतिका के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए।

साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि जिसके आदि में, मध्य में, अंत में सिर्फ आत्मा है, आत्मा ही आत्मा है वह आचार्य भिक्षु है। एक ऐसी दृष्टि जिसमें निश्चय व व्यवहार का गुंथन है वे आचार्य भिक्षु है।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि भिक्षु सत्य के लिए जन्मे, सत्य के लिए चले, सत्य के लिए दीक्षित हुए, सत्य के लिए संघर्षों को सहा, सत्य के लिए सत्य में विलीन हो गए। हमें आचार्य भिक्षु को जानना है तो उनके सिद्धांतों को समझना होगा। आचार्य भिक्षु ने मर्यादा की जो रेखाएँ खींची, उसके कारण हमारा तेरापंथ धर्मसंघ पल्लवित व पुष्पित हो रहा है। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मेरूप्रभा जी ने किया।

गंगाशहर

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रणेता आचार्यश्री भिक्षु का २२१वाँ चरमोत्सव मुनि श्रेयांस कुमार जी, शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी व साध्वी ललितकला जी के सान्निध्य में मनाया गया। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने आचार्यश्री भिक्षु को विलक्षण पुरुष बताते हुए उनके जीवन प्रसंग सुनाए। उन्होंने गीतिका के माध्यम से अभिवंदना प्रस्तुत की। शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन एक उजला प्रकाश था। वे सत्य के पुजारी थे। उन्होंने सत्य के सूरज को उजागर किया। उन्होंने सत्य के लिए धर्म क्रांति की। उनका जीवन मंगल था।

साध्वी ललितकला जी ने आचार्यश्री भिक्षु से संबंधित घटनाओं के माध्यम से उनका जीवन परिचय कराया। मुनि विमल बिहारी जी, साध्वी मृदुला कुमारी जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी कांतप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत सामुहिक गीतिका से हुआ। तेरापंथी सभा के सहमंत्री पवन छाजेड़, तेयुप के विपिन बोथरा, कन्या मंडल सह-संयोजिका प्रिया संचेती ने अभिवंदना में अपना वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला व्यवस्थापक देवेंद्र डागा ने किया।

चित्त समाधि कार्यशाला का आयोजन

छोटी खाटू।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में चित्त समाधि कार्यशला के तहल कैसे हो सुख में बुढ़ापा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण सोनाली बाफना ने भिक्षु अष्टकम से किया। साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि उम्र की वह डाली का पका हुआ फल है जो जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव के रसों से होता है केवल ७०-८० वर्ष की उम्र का नाम ही बुढ़ापा नहीं है हकीकत में निराशापन, निकम्मापन, निषेधात्मक विचार जवानों को भी बूढ़ा बना देता है। जबकि नियमित योग, प्राणायाम सत्य साहित्य सद्विचार इंद्रिय संयम, आहार संयम, आग्रह आवेश संयम, माँ का संतुलन बुढ़ापे को सुखमय बना देता है।

इसी संकलन में साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने कहा कि बुढ़ापा दुखदायी नहीं वरदान है। बुढ़ापे को सुख में बनाने के टिप्स एवं चित्त समाधि में बाधक तत्त्वों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। इसी श्रृंखला में मुख्य वक्ता गजराज बेताला ने बुढ़ापा कैसे सुख में बनाया जा सकता है, उसके प्रयोग बताए।

इसी कड़ी में राजू देवी वेद, कपूरचंद धारीवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रज्ञाप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम में सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

चिकित्सा शिविर का आयोजन

केलवा।

टीपीएफ के तत्त्वावधान में आचार्य भिक्षु चल चिकित्सालय द्वारा एवं स्थानीय तेयुप भिक्षु नगर केलवा द्वारा विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया, जिसमें डेढ़ सौ रोगियों का निःशुल्क उपचार किया गया जहाँ उन्हें दवाई आदि निःशुल्क वितरित की गई। इस शिविर में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, भिक्षु विहार समिति आदि सभी संस्थाओं का सहयोग रहा। अंत में पधारे हुए सभी चिकित्सकों का स्थानीय तेयुप द्वारा स्वागत किया गया।

ज्ञानशाला कार्यक्रम के आयोजन

टिटलागढ़

ज्ञानशाला परिवार ने स्थानीय स्तर पर ज्ञानशाला दिवस मनाया। समणी विपुलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में बगुमुंडा में प्रांतीय स्तर में ज्ञानशाला दिवस मनाया। सर्वप्रथम ज्ञानशाला परिवार ने रैली निकाली जिसमें नगर भ्रमण करते हुए रैली तेरापंथ भवन में पहुँची।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सुभद्रा जैन के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। ज्ञानशाला व्यवस्थापक रूपचंद जैन ने सभी का स्वागत किया। ज्ञानशाला संयोजिका कृष्णा जैन ने साल भर के कार्यक्रमों की जानकारी दी। ज्ञानशाला संयोजिका कृष्ण जैन ने ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं एवं ज्ञानशाला व्यवस्थापक को दुपट्टा ओढ़ाकर एवं मेडल पहनाकर सम्मानित किया। बच्चों ने सामुहिक रूप से ज्ञानशाला गीत का संगान किया तथा सामुहिक नृत्य प्रस्तुत किया। बच्चों के बीच फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता रखी गई। जिसकी थीम हमारे देश का प्रांतीय पहनावा एवं बोली रही। जिसमें बच्चों ने सुंदर प्रस्तुतियाँ दी। इसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया समर्थ जैन, द्वितीय स्थान मन्नत जैन तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया तन्वी अग्रवाल ने। बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

अंत में ज्ञानार्थी ज्ञानशाला परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले बच्चों को मोमेंटो से सम्मानित किया गया। श्रेष्ठ ज्ञानार्थी जय जगदीश और अनुष्का को तथा श्रेष्ठ मम्मी संयुक्ता जैन एवं पिंकी जैन को सम्मानित किया गया। दो प्रशिक्षिका बहनें सुभद्रा जैन एवं स्नेहा जैन ने अभातेयुप द्वारा आयोजित सरगम सिंगिंग-२०२३ क्वार्टर फाइनल में जीत हासिल की ज्ञानशाला परिवार की ओर से दोनों बहनों का मोमेंटो से सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन खुशबू जैन ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका भावना जैन ने किया।

दिनहाटा

ज्ञानशाला दिवस समारोह मनाया गया। लघु नाटिका, गीतिका, वक्तव्य, प्रश्नोत्तरी एवं आखिर में डॉ० अवीक पॉल द्वारा वक्तव्य दिया गया और सभी बच्चों का स्वास्थ्य निरक्षण किया गया।

तेरापंथ सभा मंत्री सुरेंद्र वैद, उपाध्यक्ष जयचंद सुराणा, उपाध्यक्ष सुरेंद्र बेगवानी, तेयुप अध्यक्ष लक्ष्मीपत बोथरा, मंत्री अर्पित बोरड़, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन सिंघी, ज्ञानशाला क्षेत्रीय संयोजक धर्मेन्द्र कुमार सुराणा उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला की पूर्व ज्ञानार्थी शिया बोथरा एवं प्रशिक्षिका उषा सुराणा ने किया। सभी प्रशिक्षिकाओं ने कार्यक्रम के लिए श्रम किया।

रेलमगरा

तेरापंथ सभा भवन में ज्ञानशाला दिवस साध्वी प्रसन्नयशा जी के सान्निध्य में मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता रेलमगरा तेरापंथ सभा अध्यक्ष नरेंद्र लोढ़ा ने मुख्य अतिथि अभिषेक कोठारी मेवाड़ अंचल ज्ञानशाला संयोजक, विशेष अतिथि सुनील मुणोत सह-संयोजक मेवाड़ ज्ञानशाला, विकास मादरेचा ज्ञानशाला क्षेत्रीय प्रभारी, टीपीएफ उपाध्यक्ष नवीन चोरड़िया, विनोद बोहरा थे।

कार्यक्रम का संचालन पूर्व अध्यक्ष रोशनलाल टुकलिया एवं साध्वीक माधुर्यप्रभा ने किया। इससे पहले रैली का आयोजन किया गया जिसमें संस्कार निर्माण को लेकर तख्तियाँ एवं नारे लगाते ज्ञानशाला के बच्चे कस्बे के विभिन्न मार्गो से गुजरे। इस अवसर पर साध्वी प्रसन्नयशा जी ने कहा कि ज्ञानशाला बालकों में अच्छे संस्कारों का निर्माण करती है। साथ ही जीवन में नैतिकता की भावना सीखने को मिलती है। अतिथियों का स्वागत नरेंद्र लोढ़ा, प्रकाश मेहता व मुकेश टुकल्या ने किया।

ज्ञानशाला संयोजिका मीना टुकल्या, मुख्य प्रशिक्षिका रीना लोढ़ा, सह-संयोजिका इंदिरा मेहता ने गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं ने साध्वी माधुर्यप्रभा जी के संयोजन में अपनी विभिन्न प्रस्तुतियों नाटकीय तरीकों से देकर ज्ञानशाला के बारे में जानकारी दी। मुख्य अतिथि सहित सभी विशिष्ट अतिथि ज्ञानशाला प्रभारियों ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में हर रविवार को आयोजित होने वाली प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय के साथ भाग लेने वालों को सभा द्वारा पारितोषिक दिया गया।

विकास महोत्सव के विविध आयोजन

उधना

महान राष्ट्रसंत आचार्यश्री तुलसी का पट्टोत्सव समग्र देश में विकास महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। मुनि उदित कुमार जी एवं साध्वी हिमश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, उधना में ३०वाँ विकास महोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर तेरापंथ भवन में मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी महान धर्माचार्य थे। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को नई ऊँचाइयाँ दीं। वे तेरापंथ धर्मसंघ को विकास के नवीन शिखरों पर ले गए। वे केवल तेरापंथ धर्मसंघ के ही आचार्य नहीं थे, बल्कि समग्र मानव जाति के परम मार्गदर्शक थे। उन्होंने समग्र राष्ट्र की जनता के हित के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। उन्होंने सांप्रदायिक सद्भावना, व्यवसाय एवं व्यवहार में प्रामाणिकता, पर्यावरण की सुरक्षा, व्यसनमुक्ति एवं सामाजिक कुरूढ़ियों का अत करने हेतु संदेश दिया।

साध्वी हिमश्री जी ने मुनिश्री के साथ क्षमायाचना करते हुए पर्वत पाटिया से विहार कर उधना पधारे। कार्यक्रम अनायास ही मुनिश्री एवं साध्वीश्री जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। साध्वी हिमश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी विलक्षण आचार्य थे। उन्होंने धर्मसंघ के विकास एवं मानव जाति की एकता हेतु परम पुरुषार्थ किया। वे जीवन-भर कार्यशील रहे। उनकी साहित्यिक कृतियाँ आज भी सभी के लिए पठनीय हैं। आचार्यश्री तुलसी उत्तम शिक्षाविद्, कुशल वक्ता, सिद्धहस्त गीतकार थे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ, आचार्यश्री महाश्रमण सहित अनेक विद्वान साधु-संतों का उन्होंने निर्माण किया।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि मुनि उदित कुमार जी की प्रमोद भावना उल्लेखनीय है। मुनिश्री तेरापंथ की बहुश्रुत परिषद के सदसय भी हैं। आपकी विद्वत्ता एवं क्षमता का अधिकाधिक लाभ हमें एवं समग्र संघ को मिलता रहे, यही अभ्यर्थना।

मुनि अनंत कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी परिवर्तन के जनक थे। गुणवत्ता की दृष्टि से उन्होंने तेरापंथ को अनन्य ऊँचाइयों पर पहुँचाया। मुनि रम्य कुमार जी, मुनि ज्योतिर्मय कुमार जी एवं साध्वी चैतन्ययशा जी ने प्रासंगिक प्रस्तुति दी। अणुविभा गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल ने स्वरचित मुक्त द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेममं द्वारा मंगलाचरण के रूप में सुमधुर गीत की प्रस्तुति हुई। अध्यक्षीय वक्तव्य एवं कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा, उधना के अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर ने किया। शांताबेन बोथरा ने १४ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। उनके परिवारजनों द्वारा गीतिका की प्रस्तुति की गई।

हिसार

तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव सत्य भवन में मनाया गया। तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में विकास का मौलिक आधार है–अनुशासन एवं एक आचार्य का नेतृत्व। अध्यात्म, अप्रमाद, अनुशासन के बिना विकास की प्रक्रिया को सुनियोजित ढंग से आगे नहीं बढ़ सकते। इसी दिन आचार्यश्री तुलसी पद पर अभिसित हुए। प्रतिवर्ष यह दिन पट्टोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु स्वामी ने अपनी लौह लेखनी से अमिट रेखाएँ खींची व धर्मसंघ के लिए लक्ष्मण रेखाएँ बन गई। इन रेखाओं को लाँघने वाला व्यक्ति भविष्य के गर्त में सब खो देता है। आध्यात्मिक दृष्टि से विकास के पाँच बिंदु–ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तय, वीर्य है।

विकास के शलाका पुरुष हैं आचार्यश्री तुलसी, जिन्होंने शिक्षा, साहित्य शोध, आगम संपादन, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अहिंसा प्रशिक्षण, विहार क्षेत्र विस्तार, समण श्रेणी, विदेश यात्रा, पट्टोत्सव विकास आदि नए-नए आयाम उद्घाटन हमारी विकास की गति निरंतर आगे बढ़े।

कार्यक्रम में महिला मंडल ने गीतिका का संगान किया। तेरापंथ सभा के मंत्री गौरव जैन, उपासक राजकुमार जैन, राकेश जैन आदि ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का समापन मुनिश्री द्वारा मंगलपाठ से हुआ।

नोखा

तीस वर्ष पूर्व आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने घोषणा की कि विकास के पर्याय आचार्यश्री तुलसी ने मुझे आचार्य बना दिया। इस दिन को पट्टोत्सव न मनाकर, विकास महोत्सव मनाया जाएगा। तेरापंथ में नए-नए आयाम, रूढ़ि उन्मुलन, अणुव्रत, जीवन-विज्ञान, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, पारमार्थिक शिक्षण संस्था अनेक विकासशील कार्य हुए तथा हो रहे हैं, ऐसे थे क्रांतिकारी आचार्यश्री तुलसी। यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने विकास महोत्सव पर व्यक्त किए।

साध्वी कुसुमप्रभा जी, साध्वी पुलकितयशा जी, साध्वी विधिप्रभा जी, साध्वी प्रभातप्रभा जी ने आचार्यश्री तुलसी के व्यक्तित्व, कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए विलक्षण, अद्वितीय आचार्य बताया। अनुशासन, मर्यादा के पुरोधा बताया।

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। संचालन महिला मंडल अध्यक्षा सुमन मरोठी ने आचार्य तुलसी को विश्रुति बताया। सीमा घीया के १६ दिन तप पर अभिनंदन-तप जारी है। सीमा ने हिम्मत की है। तपने से सोना कुंदन बन जाता है। साध्वी राजीमती जी ने आशीर्वचन कहे।

डॉ० बी०सी० घीया, मंत्री लाभचंद छाजेड़, उपाध्यक्ष इंदरचंद बैद, मनोज घीया, घीया परिवार की महिला व नन्ही बालिकाएँ, स्वयं तपसण सीमा घीया, तोलाराम घीया सहित अनेक जनों ने तपस्विनी सीमा को बधाई दी। तेरापंथ सभा, महिला मंडल द्वारा मोमेंटो, साहित्य तपस्वी को भेंट किया गया।

सिवानी

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ में आचार्यश्री तुलसी का ३०वाँ विकास महोत्सव मनाया गया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में कन्या मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी २०वीं सदी के देदीप्यमान दिवाकर थे, विकास के शलाका पुरुष थे, विकास के शिखर के प्रतीक थे। आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को असीम ऊँचाइयाँ प्रदान की। मानव जाति के उत्थान के लिए अणुव्रत का शंखनाद किया। आप मानवता के मसीहा थे। आपके अनेक अवदानों से सारा समाज उपकृत रहेगा।

साध्वी सुलभयशा जी एवं साध्वी संबोधयशा जी ने सुमधुर संगीत का संगान किया। सरिता बंसल ने गीत की प्रस्तुति दी। ऋतु गोयल ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुमंगलाश्री जी ने किया। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष रतनलाल बंसल, जैन सभा मंत्री सुशील बंसल, महेंद्र गोयल, सांवरा सुभाष जैन आदि श्रावक समाज उपस्थित थे।

पचपदरा

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में विकास महोत्सव का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत साध्वी पुण्यदर्शनाजी, साध्वी शशिप्रज्ञा जी, साध्वी रोशनीप्रभा जी, साध्वी जयंतमाला जी, साध्वी संकल्पप्रभा जी ने आचार्य तुलसी के अवदानों, उनके मानसिक, शारीरिक श्रम का परिचय कराया एवं गीत प्रस्तुत किया। शासनश्री साध्वी सत्यवती जी ने आचार्य तुलसी जैसे साहसी आचार्य उनके प्रेरक सुव्रत से नई स्फुरणा प्रदान करवाई।

सोहनलाल छाजेड़ ने गीतिका के द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन रूपेन्दु ढेलड़िया ने किया व इस महोत्सव का शुभारंभ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ।

स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन

बल्लारी।

डॉ० मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में उत्तरी कर्नाटक के ४१ से अधिक तेरापंथी क्षेत्रों की संगठित संस्था 'उत्तर कर्नाटक तेरापंथ सेवा समिति' के स्वर्ण जयंती समारोह का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में बैंगलुरु से आए महासभा के ट्रस्टी शासनसेवी मूलचंद नाहर तथा महासभा कार्यकारिणी सदस्य प्रकाश लोढ़ा, मुख्य अतिथि के रूप में तथा वरिष्ठ अतिथि के रूप में पश्चिम महाराष्ट्र तेरापंथ सभा अध्यक्ष उत्तमचंद पगारिया, मलनाड तेरापंथ क्षेत्रीय समिति के पूर्व अध्यक्ष तेजकरण सिपानी वर्तमान अध्यक्ष महावीर भंसाली आदि की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जयंतीलाल चोपड़ा, मंत्री पुष्पराज बाफना ने उपस्थित सभी अतिथियों का शाब्दिक एवं मोमेंटो से स्वागत सम्मान किया। स्वर्ण जयंती समारोह का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण से हुआ। मंगलाचरण तेममं ने किया। बल्लारी सभा अध्यक्ष कमलचंद छाजेड़, रमेश चोपड़ा सहित अनेक वक्ताओं ने गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से विचार प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री केसरीचंद गोलेछा ने किया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में 'कैसे हो श्रावकत्व का विकास' विषय पर डॉ० मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा कि श्रावक वह होता है जो संस्कृति समाज और परिवार को सुरक्षित रखता है। तेरापंथी श्रावक की विशेषता होती है कि वह गुरु इंगित की विशेष आराधना करता है। तेरापंथ धर्मसंघ का प्रत्येक श्रावक श्रद्धावान, ज्ञानवान, क्रियावान और योगदान देने वाला बने।

ज्ञानशाला दिवस के संदर्भ में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चों ने आकर्षक प्रस्तुतियाँ दी। स्वर्ण जयंती समारोह में उत्तर कर्नाटक के हुबली, हिरियूर, चित्रदुर्गा, बेलगाँव, द्रावणगेरे, गुंटकल, चल्लकेरे, कुक्कनूर सौदत्ती, होसदुर्गा, कोप्पल, गदग, होसपेट, कून्नूर, गंगावती, सिंधनूर, करनूल, हावेरी, मानवी, रायचूर, कंपली, यादगीर, शोरापुर, शाहपुर, गोवा तथा गुलबर्गा आदि तेरापंथी क्षेत्रों से लगभग ५०० से ज्यादा श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं तेयुप, बल्लारी के सभी कार्यकर्ताओं ने विशेष योगदान दिया।

तप अनुमोदना

शाहदरा, दिल्ली।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनुकंपा से व साध्वी अणिमाश्री जी के श्रीमुख से समता धर्मपत्नी संतोष कोचर कृष्णानगर प्रवासी ने मासखमण(३०) के तप का प्रत्याख्यान किया। शाहदरा सभा परिवार द्वारा तपस्विनी बहन का साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया।

सम्यक् दर्शन कार्यशाला का आयोजन

रायपुर।

अभातेयुप व समण संस्कृति संकाय (जैन विश्व भारती) के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की कृति 'शरीर और आत्मा' पुस्तक आधारित परीक्षा हेतु समणी निर्देशिका डॉ० ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी डॉ० मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तीन दिवसीय सम्यक् दर्शन कार्यशाला-२०२३ का आयोजन किया गया। जिसमें तेयुप, रायपुर के पदाधिकारियों, सदस्यों की सहभागिता रही।

प्रेक्षा दिवस कार्यक्रम का आयोजन

पीलीबंगा।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार प्रेक्षा दिवस के उपलक्ष्य में स्थानीय प्रेक्षावाहिनी द्वारा मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा दिवस का आयोजन जैन भवन में किया गया। कार्यक्रम में मुनि अमृत कुमार जी ने बहुत सरल तरीके से प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। एवं प्रेक्षाध्यान का अर्थ बताते हुए अपने वक्तव्य में आज के दौर में ध्यान का महत्त्व बताया।

मुनि उपशम कुमार जी ने प्रेक्षाध्यान सिद्धांत, दर्शन एवं इतिहास के बारे में बताया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रेक्षागीत के गायन से राजकुमार जैन के द्वारा हुई। कार्यक्रम में मंगलभावना का प्रयोग सतीश पुगलिया ने करवाया और कार्यक्रम के अंत में देवेंद्र बांठिया द्वारा उपस्थित सभी लोगों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन प्रेक्षावाहिनी संवाहक ओमप्रकाश पुगलिया ने किया।

विद्या संस्थानों में लौकिक विद्या पढ़ाई जाती है। इसके साथ अलौकिक, अर्थात् आत्मविद्या पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

–आचार्य श्री महाश्रमण

सीपीएस दीक्षांत समारोह का आयोजन

तिरुपुर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में सीपीएस दीक्षांत समारोह का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ किया गया। कार्यक्रम दो सत्रों में संपादित किया गया। पहले सत्र में अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता की अध्यक्षता में कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की घोषणा की गई। परिषद साथियों द्वारा मंगलाचरण के रूप में विजय गीत की प्रस्तुति दी गई। जयेश मेहता ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया तथा सभी का स्वागत किया।

साध्वीश्री जी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में एक वक्ता की विशेषताओं के बारे में बताया। कैसे माइक पकड़ना, कैसे शब्दों का प्रयोग करना, कब बोलना, कितना बोलना और कहाँ नहीं बोलना यह सब सीपीएस सिखाता है। जब तक हम जीवन में सीपीएस में बताए गई बातों का पुनरावर्तन नहीं करेंगे, तब तक कार्यशाला में भाग लेना सार्थक नहीं हो सकेगा। सात दिवसीय कार्यशाला में संगीता गन्ना, विवेक संकलेचा एवं अनिता गांधी ने कुल ७० संभागियों को ट्रेनिंग दी। इसके पश्चात प्रथम बैच के ३२ प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुति दी। इसके उपरांत राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया। अनीता गांधी ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया एवं मूल्यांकन कर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार की घोषणा की। इसी के साथ कुल ७ और पुरस्कार वितरण किए गए। सभी प्रतिभागियों को सार्टिफिकेट से सम्मानित किया गया।

तेयुप, तिरुपुर के सत्र-२०२३-२४ के लिए कुल १५ प्रायोजकों का सम्मान शॉल भेंट कर किया गया। प्रथम सत्र के समापन की घोषणा जयेश मेहता ने की। दूसरे सत्र का प्रारंभ में कुल ३३ संभागियों ने अपनी प्रस्तुति दी। दूसरे सत्र में भी कुल १० पुरस्कार दिए गए एवं सभी प्रतिभागियों को सार्टिफिकेट से सम्मानित किया गया। तेयुप अध्यक्ष सोनू डागा ने अपने वक्तव्य से सभी प्रतिभागियों के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। दोनों सत्रों में आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री अंकित बोथरा ने किया। कार्यक्रम में समाज के लोगों की काफी अच्छी उपस्थिति रही। तिरुपुर में सीपीएस की कार्यशाला ७ दिनों तक चली जिसके संयोजक तरुण आंचलिया रहे। कार्यक्रम में तिरुपुर शाखा प्रभारी कोमल डागा, इंटरनेशनल ट्रेनर अनीता गांधी, परिषद अध्यक्ष एवं युवावाहिनी सह-प्रभारी सोनू डागा, अभातेयुप समिति सदस्य चेतन बरड़िया कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

विवेक विहार, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में नवगठित पूर्वी दिल्ली तेममं का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन ओसवाल भवन में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तेमम की बहनों द्वारा गीत का संगान किया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि पूर्वी दिल्ली तेममं को यह दायित्व नए रूप में मिला है तो इसमें विचारों का, भावनाओं का, कर्तृत्व को मुखर होने के लिए हर एक का आत्मीय सहकार चाहिए। हर सदस्य का सहयोग भावना, विचारधारा भी सम्यक् होनी चाहिए।

अभातेमम की मुख्य ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी ने पूर्वी दिल्ली तेममं की संस्थापक अध्यक्ष सरोज सिपानी को शपथ दिलाई। नवमनोनीत अध्यक्ष सरोज सिपानी ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी पधारे पदाधिकारियों एवं श्रावक-श्राविका समाज का स्वागत किया। सबके साथ व सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की। तत्पश्चात अपनी टीम को शपथ दिलाई।

पूर्वी दिल्ली कन्या मंडल संयोजिका अंकिता हीरावत को शपथ दिलाई। अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री भीकमचंद सुराणा, दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, दिल्ली तेममं की अध्यक्ष मंजु जैन, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, गांधीनगर सभाध्यक्ष कमल गांधी, गाजियाबाद सभाध्यक्ष सुशील सिपानी, तेयुप दिल्ली के अध्यक्ष विकास चोरड़िया, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, अणुव्रत न्यास के न्यासी शांतिकुमार जैन आदि ने अपने वक्तव्य के माध्यम से शुभकामनाएँ प्रेषित की।

कार्यक्रम में अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के प्रायोजक विजयलक्ष्मी बाबूलाल दुगड़ रहे। उनके प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन नवमनोनीत मंत्री सुमन भंडारी ने किया।

कैंसर मुक्त कैंप का आयोजन

फरीदाबाद।

तेयुप, फरीदाबाद का यह प्रयास 'कैंसर मुक्त हो हर एक वर्ग- हर एक समाज' तेयुप की प्रेरणा से मिनी मीटर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी प्राइवेट लि०, फरीदाबाद द्वारा रोटरी हेरिटेज व सर्वोदय हॉस्पिटल के सहयोग से महिला ब्रेस्ट कैंसर जागरूकता व जाँच शिविर का आयोजन किया गया। इस जाँच शिविर में आईआईएफ एसोसिएशन, फरीदाबाद का विशेष सहयोग रहा। कैंप में विशेष आमंत्रित हरेंद्र मान (असिस्टेंट डायरेक्टर इंडस्ट्री हेल्थ एंड सेफ्टी हरियाणा सरकार), आईआईएफ के प्रधान प्रमोद राणा एवं टीम सदस्य रश्मि सिंह, आई०सी० जैन, तेज चौधरी, एच०एस० सेखो, वीपी दलाल,, वीपी गोयल एवं तेयुप के सदस्य गौतम जैन, अभातेयुप सदस्य राजेश जैन, तेयुप मंत्री राघव बाफना आदि अनेक जन उपस्थित थे।

कैंप की मुख्य वक्ता सर्वोदय हॉस्पिटल से कैंसर विशेषज्ञ डॉ० नीतू सिंगल ने कैंसर के लक्षण व बचाव के बारे में कर्मचारियों को जागरूक किया। कैंप में कंपनी के लगभग १०० से अधिक कर्मचारी लाभान्वित हुए। कैंप की विशेषता महिलाओं की मैमोग्राफी टेस्ट, थायराइड टेस्ट, केलोस्ट्रोल टेस्ट, बीपी, शुगर आदि जाँच निःशुल्क की गई।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के ४८वें महिला अधिवेशन...

(पृष्ठ १४ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा कृत कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि सभी शाखा मंडलों में नारी लोक और उसमें दिए गए कार्यों के प्रति बहुत ही उत्साह का भाव रहता है और सभी शाखा मंडल नारीलोक में दिए गए कार्यों को पूर्ण करने के लिए तत्पर रहते हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को अब एक हाई परफार्मर संस्था बनकर दिखाना है। एक हाई परफार्मर संस्था बनने के लिए 3c- Character, Connecton and contribution आवश्यक हैं। आचार्यप्रवर ने महती कृपा कर फरमाया कि महिला मंडल बहुत ही गति-प्रगति कर रहा है। महिलाओं ने बहुत विकास किया है। उनके बोलने की शैली भी बहुत अच्छी हुई है और साथ ही साथ उनकी श्रद्धा, भक्ति, समर्पण और सेवा भावना भी अप्रतिम है। पूज्य गुरुदेव ने नए अध्यक्ष को धार्मिक, आध्यात्मिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी।

तत्पश्चात नव-मनोनीत अध्यक्ष सरिता डागा को निवर्तमान अध्यक्ष नीलम सेठिया ने शपथ ग्रहण करवाई। राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता जी डागा ने अपनी नई टीम की घोषणा करते हुए उन्हें शपथ दिलवाई। नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष ने गुरु चरणों में अपनी अभिवंदना निवेदित करते हुए संस्कार सेतु के रूप अपना ग्यारह सूत्री विजन प्रस्तुत किया।

विकास महोत्सव का आयोजन

पीतमपुरा, दिल्ली।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने विकास महोत्सव के शुभारंभ की अवगति देते हुए कहा कि सुजानगढ़ मर्यादा महोत्सव पर आचार्यश्री तुलसी ने अपने आचार्य पद का विसर्जन कर दिया। आचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य बना दिया। वहाँ से आप दिल्ली चातुर्मास के लिए पधारे। भाद्रव शुक्ला नवमी का दिन आया। आपने कहा कि अब मेरा पट्टोत्सव नहीं मनाया जाएगा। पट्टोत्सव महाप्रज्ञ का होगा।

तत्काल प्रांजल प्रज्ञा के धनी आचार्य महाप्रज्ञ जी ने कहा–हम पट्टोत्सव नहीं इस दिन विकास महोत्सव मनाएँगे।

आचार्य तुलसी विकास पुरुष थे। आपने विकास के नए-नए स्रोत खोले। जिनका पूरा आकलन करना असंभव है। तेरापंथ धर्मसंघ ने जो आकाशीय ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं। उसका कारण आचार्य तुलसी की पारदर्शी दृष्टि एवं क्रांतिकारी चिंतन है।

शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने कहा कि आचार्य तुलसी एक सिद्ध पुरुषथे। उनका वचन वरदान था। चिंतन संधान था। कर्म अवदान था। आप एक शक्ति संपन्न आचार्य थे। आपने जो सोचा वह कर दिखाया।

शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने कहा कि आप एक महादीप थे कितने दीपों को प्रज्वलित किया। आप एक कुशल माली थे, अनेकों बीजों को फलवान बनाया। आप एक कुशल कलाकार थे, कितने अनघड़ पत्थरों को प्रतिमा का रूप दिया।

साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी महनीय व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी अमृत भरी नजरें जिस पर टिक आती वह कृतार्थ हो जाता, उनके दो कृपापूर्ण शब्द मिल जाने से वह धन्यातिधन्य बन जाता।

कार्यक्रम का शुभारंभ तुलसी अष्टकम से साध्वी कार्तिकप्रभा जी, साध्वी चिंतनप्रभा जी ने किया। तेरापंथ महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, खिलौनी देवी धर्मशाला के पारिवारिक सदस्य महेश कुमार एवं ललित कुमार, पीतमपुरा सभा उपाध्यक्ष मनफूल देवी, वीरेंद्र कुमार आदि वक्ताओं ने तुलसी चरणों में श्रद्धा-सुमन अर्पित किए।

कार्यक्रम का संयोजन साध्वी चिंतनप्रभा जी ने किया। तुलसी अभिवंदना के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

'राइजिंग हाई टच द स्काई' की कार्यशाला का आयोजन

नंदनवन।

तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा आयोजित 'राइजिंग हाई टच द स्काई' की आठवीं कार्यशाला का आयोजन नंदनवन परिसर में हुआ, जिसका विषय रहा–My way-Highway । आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी की प्रेरणा से साध्वी प्रबुद्धयशा जी ने कार्यशाला ली। साध्वीश्री जी ने धर्म-अधर्म को सरल तरीके से समझाया। कन्या मंडल संयोजिका काजल मादरेचा ने अभी तक हुई सभी कार्यशाला की संक्षिप्त जानकारी दी।

कन्या मंडल प्रभारी मधु बाफना ने राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया का स्वागत किया। निलम ने कन्याओं को मोटिवेट करते हुए कहा कि कन्याओं को तेरापंथ की बेसिक जानकारी होनी चाहिए। मुंबई में गुरुदेव के प्रवास का ज्यादा से ज्यादा लाभ लें।

पूज्यप्रवर ने प्रेरणा देते हुए कन्याओं के आध्यात्मिक विकास कैसे करें, यह प्रेरणा दी। क्षमायाचना कर सभी कन्याओं ने मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, मातृ हृदया साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी एवं साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी व सभी साधु-संतों की दर्शन व सेवा करके सामुहिक रूप से खमतखामणा किया।

अभातेमम अध्यक्षा नीलम सेठिया, ट्रस्टी प्रकाश देवी तातेड़, कार्यकारिणी सदस्य निर्मला चंडालिया, मुंबई महिला मंडल की अध्यक्षा विमला कोठारी, सह-संयोजिका नेहा सोलंकी आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन नीकिता चौहान ने किया। कार्यशाला में मुंबई कन्या मंडल की ११० कन्याओं की उपस्थिति रही।

फिट युवा-हिट युवा

कृष्णानगर, दिल्ली।

तेयुप द्वारा आयोजित फिट युवा-हिट युवा का आयोजन उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के वृहद मंगल पाठ से हुआ। उसके बाद योग प्रशिक्षक निर्मल छल्लाणी द्वारा योगाभ्यास करवाया गया और प्रेक्षाध्यान के प्रयोग भी करवाए। कार्यक्रम में गांधीनगर सभा के मंत्री हेमराज राखेचा उपस्थित थे। गांधीनगर क्षेत्र संयोजक मिलन बोथरा ने आभार ज्ञापन किया।

पर्युषण महापर्व का शुभारंभ

पीतमपुरा, दिल्ली।

खिलौनी देवी धर्मशाला में पीतमपुरा में पर्युषण महापर्व पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि जैसे सब मंत्रों में नमस्कार महामंत्र सब तीर्थों में शत्रुंजय, सब दानों में अभयदान श्रेष्ठ है। वैसे ही सब पर्वों में पर्युषण महापर्व श्रेष्ठ है। तप, जप, स्वाध्याय, ध्यान की सरिताएँ वेगवती बनकर बहने लगती है।

कार्यक्रम का शुभारंभ शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने आगम वाचन के द्वारा किया गया। शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने खाद्य संयम के संदर्भ में कहा कि प्रत्येक साधना का प्रारंभ खाद्य संयम की साधना के साथ होता है। साध्वी कार्तिकप्रभा जी एवं साध्वी चिंतनप्रभा जी ने सुमधुर स्वरों में गीत की प्रस्तुति दी। अंत में सुरेंद्र मालू पीतमपुरा सभा के मंत्री ने आठ दिनों में होने वाले कार्यक्रमों की अवगति दी। पीतमपुरा महिला मंडल ने मंगल गीत का संगान किया।

कार्यक्रम में त्रिनगर राजेंद्र नगर, कीर्तिनगर, मानसरोवर, शालीमार बाग, करोल बाग आदि विभिन्न क्षेत्रों के लोग उपस्थित हुए।

स्वाध्याय दिवस के संदर्भ में शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आगम में स्वाध्याय के पाँच भेद बताए हैं। वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा। अनुप्रेक्षा और धर्मकथा के द्वारा सत्य का ज्ञान होता है। भगवान महावीर ने कहा कि स्वाध्याय से ज्ञानावरण और दर्शनावरण कर्म क्षीण होते हैं। इसी संदर्भ में साध्वी चिंतनप्रभा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। महिला मंडल, त्रिनगर ने मंगलाचरण किया।

सामायिक दिवस–आचार्यप्रवर के द्वारा निर्देशित सामायिक दिवस पर तेयुप, दिल्ली ने मंगलाचरण किया। अभिनव सामायिक का शुभारंभ साध्वी चिंतनप्रभा जी द्वारा चिपदी वंदना के प्रयोग द्वारा किया गया।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने त्रिगुप्ति की साधना, दीर्घ श्वास प्रेक्षा, स्वाध्याय आदि का प्रयोग कराया। तेयुप द्वारा समायोजित सामायिक दिवस पर ५०३ सामायिक हुई। कार्यक्रम के अंत में साध्वीवृंद ने सुमधुर गीत का संगान किया।

अणुव्रत चेतना दिवस पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने अपने वक्तव्य में ऐतिहासिक पुरुष २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जीवन प्रसंग सुनाए। शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने अणुव्रत के संदर्भ में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अणुव्रत जीवन निर्माण की सुंदर प्रक्रिया है। सुखमय जीवन जीने की चाबी है। यह असांप्रदायिक धर्म का प्रारूप है। यह प्रत्येक व्यक्ति को जैन नहीं गुड मैन बनाने की प्रेरणा देता है।

अणुव्रत चेतना दिवस का शुभारंभ अणुव्रत समिति, दिल्ली के उपाध्यक्ष कमल एवं अन्य व्यक्तियों ने अणुव्रत गीत से किया। महिला मंडल, कीर्तिनगर ने एवं साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

जप दिवस पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने भगवान महावीर के २७ भवों के विषय में प्रस्तुति दी। आत्मा का उत्कर्ष और अपकर्ष होता रहता है। ऐसी कोई गति नहीं, जाति नहीं और ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ आत्मा ने जन्म नहीं लिया है। परंतु कोई स्वर्णिम क्षण ऐसा आता है, जिसमें कर्मों के हलकापन से आत्मा उत्कर्ष की ओर कदम बढ़ा लेती है। साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने जप का महत्त्व बताते हुए कहा जप के साथ जुड़ा हुआ प्रश्न है आस्था का। बहुत लोग जप करते हैं, पर उसके प्रति संदेहशील रहते हैं। लाभ मिलेगा या नहीं। वह संदेह सफलता में बाधक बनता है। यदि विधिवत बीज वपन होता है तो अवश्य फल तिमलता है।

दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, मंत्री प्रमोद घोड़ावत, कल्याण परिषद के सदस्य शांतिलाल जैन, तेयुप के अध्यक्ष विकास जैन ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी सुव्रतां जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५१वें दीक्षा महोत्सव पर हनुमान सेठिया ने ५१ दिनों की तपस्या की है, उसका जिक्र करते हुए भविष्य में आगे बढ़ने के लिए शुभकामना व्यक्त की। कार्यक्रम का संयोजन सुरेंद्र मालू ने किया।

ध्यान दिवस पर महिला मंडल ने प्रेक्षा गीत का संगान से मंगलाचरण किया। शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग–कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा, चैतन्य केंद्र प्रेक्षा अंतर्यात्रा के प्रयोग कराए।

अंत में शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में कहा कि प्रेक्षाध्यान का अर्थ है–अतीत और अनागल से मुक्त हो वर्तमान में जीना, स्मृति कल्पना से मुक्त हो यथार्थता में जीना, प्रियता-अप्रियता से मुक्त हो समता में जीना, चिंता-व्यथा से मुक्त हो चेतना के शुद्ध धरातल पर जीना। प्रेक्षाध्यान एक रसायन है, जिसके सेवन से शरीर ही नहीं आत्मा भी पुष्ट होती है।

संवत्सरी महापर्व पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने जैन धर्म की प्रभावना आचार्य परंपरा एवं तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा, साध्वी चिंतनप्रभा जी ने तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वीप्रमुखा परंपरा पर विस्तृत प्रकाश डाला। महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने भाव व्यक्त किए।

प्रारंभ में शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने गजसुकुमाता, साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने शालिभद्र का जीवन-वृत्त सुनाया। तपस्याएँ एवं पौषध अतिमात्रा में हुए। महाप्रज्ञ के जीवन के प्रेरणादायी प्रसंग महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने सुनाए। संघ गान के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

क्षमायाचना दिवस पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि दुनिया में अनेक प्रकार की शक्तियाँ हैं। पर सबसे बड़ी शक्ति क्षमा की है। भगवान महावीर ने अपनी प्रांजल वाणी में कहा–सबके साथ मेरी मैत्री है, वैर किसी के साथ नहीं है। जिसके हाथ में क्षमा का शस्त्र है उसका शत्रु कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। जहाँ घास-फूस नहीं है, वहाँ पेड़ हुए अग्नि के कण अपने आप बुझ जाते हैं। अपने दिल को विशाल बनाकर मैत्री मंत्र का प्रयोग करें।

शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने कहा कि आपने आज से आठ दिन पहले हिमालय पर आरोहण करना शुरू कर दिया। कल संवत्सरी के दिन शिखर पर पहुँच गए, आज क्षमापना दिवस पर हिमालय की चोटी पर क्षमा की ध्वजा फहराना है। वह कुशलतापूर्वक फहराएँ तो आपकी आठ दिन की गई साधना, आराधना सफलतम होगी।

आप सरल हृदय से क्षमा लें और दें। अंत में सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए क्षमा का आदान-प्रदान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कार्तिकप्रभा जी, साध्वी चिंतनप्रभा जी ने महावीर अष्टकम से किया।

भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेयुप द्वारा महामना भिक्षु के २२१वें भिक्षु चरमोत्सव एवं भादूड़ी तेरस के उपलक्ष्य में धम्म जागरण का आयोजन सुपारस दुगड़ के निवास स्थान पर किया गया। उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद ने महामना भिक्षु को याद करते हुए उपस्थित सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

उपस्थित सभी ने भिक्षु स्वामी के प्रति अपनी अभिव्यक्ति सुमधुर भजनों एवं गीतों के माध्यम से दी। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद, उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी, मंत्री अमित बेगवानी, सहमंत्री राहुल दुगड़, संगठन मंत्री रोहित बैद सहित भिक्षु धम्म जागरण के संयोजक हर्ष बांठिया, जितेंद्र बैद, प्रियांश नाहटा, कार्यसमिति सदस्य नवीन सेठिया सहित लगभग ३० जनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष एवं भिक्षु धम्म जागरण के पर्यवेक्षक हितेंद्र बैद ने किया। उपस्थित सभी का आभार प्रियांश नाहटा ने किया।

मेधावी छात्र सम्मान समारोह

सिकंदराबाद।

तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य एवं टीपीएफ, हैदराबाद के तत्त्वावधान में मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि हर व्यक्ति सफलता चाहता है और मंजिल तक पहुँचने के लिए पुरुषार्थ करता है, संकल्प करता है। पर मात्र चाहने और संकल्प करने से लक्ष्य नहीं मिलता। सफलता के लिए पहला स्वर्णिम सूत्र है–आत्मविश्वास। आपका अपने प्रति अगर विश्वास है तो कई हाथ सहयोग के लिए आगे बढ़ जाते हैं। सफल होने के लिए लक्ष्य के प्रति १०० प्रतिशत समर्पित हो जाएँ। हर कार्य को योजनापूर्वक करें और अनुशासन को प्रमुख आधार बनाएँ। अपनी क्षमताओं का उपयोग करें। अंधेरों में रोशनी की तलाश करें और दूसरों पर करें या न करें पर खुद पर विश्वास अवश्य करें, कामयाबी आपको निश्चित मिलेगी इसमें संदेह नहीं।

साध्वीश्री जी ने कहा कि समाज के प्रतिभावान नौनिहालों का सम्मान करना टीपीएफ का सराहनीय कदम है, इससे प्रतिभाएँ प्रोत्साहित होती हैं। साध्वीवृंद के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। टीपीएफ के अध्यक्ष पंकज संचेती ने मंचासीन पदाधिकारीगण एवं संपूर्ण परिषद का स्वागत किया।

तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने कहा कि टीपीएफ को मैं इस कार्य के लिए बधाई देता हूँ। जिन बालक-बालिकाओं ने अपने पुरुषार्थ से परिवार और समाज का नाम रोशन किया है, उनके प्रति मंगलकामना करता हूँ। भविष्य में वे आगे बढ़ते रहें। साध्वीवृंद ने गीतिका प्रस्तुत की। मेधावी छात्र-छात्राओं का टीपीएफ परिवार की ओर से सार्टिफिकेट एवं मैडल से सम्मान किया गया।

मंच संचालन दीक्षा सुराणा ने किया। इस सम्मान समारोह कार्यक्रम को सफल बनाने में अनुश बंबोली एवं टीपीएफ कार्यकारिणी का सक्रिय सहयोग रहा। कार्यक्रम में टीपीएफ राष्ट्रीय टीम से नवीन सुराणा, दीपक संचेती, ऋषभ दुगड़, बैंगलोर, टीपीएफ अध्यक्ष हितेश गिरिया, अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश डागा आदि की उपस्थिति रही।

भिक्षु चरमोत्सव के आयोजन

भिलोड़ा

तेरापंथी उपसभा, भीलोड़ा द्वारा आचार्य भिक्षु चरमोत्सव पर धम्म जागरण महावीर भवन में मनाया गया। नमस्कार महामंत्र एवं ॐ भिक्षु-जय भिक्षु के जप के साथ कार्यक्रम का आगाज हुआ। कार्यक्रम में पधारे हुए सभी अतिथिगण एवं श्रावक समाज का उपसभा अध्यक्ष महावीर चावत द्वारा स्वागत किया गया। तेममं की अध्यक्षा रेखा भटेवरा, मंत्री टीना चावत, महिला मंडल सदस्य श्रद्धा दुगड़, दक्षा दक, डिंपल दक, रीना दक, मंजु पोखरना, सोनु पोखरना, प्रेमीलाबेन दक, प्रेमीलाबेन पोखरना एवं ज्ञानशाला के बच्चे जीया चावत, छवि पोखरणा, सांची पोखरणा के द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई।

आचार्य भिक्षु स्वामी के गीतों पर अंत्याक्षरी का आयोजन भी हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित श्रावक समाज ने इस कार्यक्रम की प्रशंसा की। कार्यक्रम का समापन तेरापंथ धर्मसंघ के नारे द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन विकेश दक ने किया।

कोटा

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आचार्य भिक्षु का २२१वाँ चरमोत्सव शासनश्री साध्वी धनश्री जी के सान्निध्य में तेयुप के संगान के साथ प्रारंभ हुआ। शासनश्री साध्वी धनश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु तेरापंथ के प्रवर्तक थे। सोभणी श्रावक की बेड़ियाँ और रूपाजी का खोड़ा टूटा तो वह केवल जप से नहीं टूटा, वह तन्मयता और भिक्षुमय बन जाने से टूटा। साध्वी शीलयशा जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

सभा अध्यक्ष संजय बोथरा, अणुव्रत समिति के मंत्री भूपेंद्र बरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रवि बुच्चा ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सलिलयशा जी द्वारा किया गया। तेयुप के तत्त्वावधान में धम्म जागरण रखा गया।

F कर्मवाद आस्तिक विचारधारा का महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। दो प्रकार की विचारधाराएँ हैं–आस्तिक व नास्तिक।

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के ४८वें महिला अधिवेशन 'क्षितिज--- असीम संभावनाओं के' का शुभारंभ

नंदनवन।

शुभारंभ सत्र

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के ४८वें महिला अधिवेशन 'क्षितिज--- असीम संभावनाओं के' का शुभारंभ नंदनवन परिसर में आचार्य श्री महाश्रमण की पावन सन्निधि में हुआ। अधिवेशन का शुभारंभ लोगो अनावरण के साथ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने गुरु चरणों में प्रतिभागी सभी बहनों की ओर से अभिवंदना एवं सुखप्रच्छा की। द्विवर्षीय सफर हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कृतज्ञ भाव से निवेदन किया कि १६ वर्ष पूर्व तलहटी से प्रारंभ हुई यह यात्रा गुरु कृपा से पूर्णता की ओर है। महामंत्री मधु देरासरिया ने प्रतिवेदन समर्पित किया। आचार्यप्रवर ने अपने मंगल आशीर्वचन में फरमाया कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप जीवन की अमूल्य संपत्ति हैं। ज्ञान का जीवन में विकास हो, सम्यक् दर्शन पुष्ट रहे, त्याग प्रत्याख्यान द्वारा चारित्र की पुष्टि करें, जीवन में तप की आराधना करें। आचार्यप्रवर ने महिला मंडल के विकास में शासनमाता के अमूल्य योगदान का भी स्मरण किया। पूज्य गुरुदेव ने महिला मंडल के कार्यों के प्रति संतोष व्यक्त करते हुए फरमाया कि आगामी अधिवेशन में अच्छा चिंतन-मंथन हो, अच्छा कार्य हो, अच्छी रूपरेखा बने। नये अध्यक्ष के नेतृत्व में महिला मंडल अच्छा आध्यात्मिक विकास करे - इस आशीर्वाद के साथ पूज्यप्रवर ने समुपस्थित केंद्रीय टीम को मंगल पाठ से कृतार्थ किया।

अभिनंदन सत्र

तत्पश्चात कार्यक्रम के द्वितीय चरण में राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया द्वारा सभी शाखा मंडल के अध्यक्षों को अध्यक्षीय कॉलर पहनाकर अभिनंदन किया गया। सभी प्रांतों का विशिष्ट अंदाज में अभिनंदन किया गया। इस इंडक्शन सेरेमनी से शाखा मंडलों को अतिरेक प्रसन्नता एवं गौरव की अनुभूति हुई। सभी से अनुरोध किया गया कि इस कॉलर बैज को उन्हें खास अवसरों पर पहनना है और अपना कार्यकाल संपन्न होने के बाद आगामी नेतृत्व को सौंप देना है। महामंत्री मधु देरासरिया ने सभी का उत्साहवर्धन किया। इस सत्र को सफल बनाने में मंजुला डूंगरवाल, विनीता बैंगानी एवं संगीता बाफना का सार्थक श्रम लगा।

उत्साहवर्धक सत्र

परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमण जी के मुखारविंद से मंगल पाठ श्रवण कर राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम जी सेठिया ने ४८वें राष्ट्रीय अधिवेशन के शुभारंभ की घोषणा की। श्रद्धेया साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के सान्निध्य में इस सत्र का आयोजन हुआ। मुंबई महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण के पश्चात चीफ ट्रस्टी श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने अधिवेशन में पधारी सभी बहनों का स्वागत करते हुए कहा कि जिस संगठन का नेतृत्व मजबूत हो उस संगठन को आगे आने से कोई नहीं रोक सकता। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने कहा कि संगठन के नेता का ये दायित्व होता है कि वह सभी को साथ लेकर चले और संगठन के सदस्यों का भी दायित्व होता है कि वे अपने नेता की बात को प्राथमिकता दें। जो संगठन समय अनुसार कार्य करता है वह संगठन आगे बढ़ता है। जिस संस्था में परंपरा के साथ नवीनता भी अपनायी जाती है वह संस्था विकास करती है। आपने कहा कि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल पुरानी परंपराओं के साथ नवीनता को सम्मिलित कर हर कार्य पूर्ण करती है। इस सत्र का संचालन रमन पटावरी ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने सभी बहनों को प्रेरणा देते हुए कहा कि मंडल किसी एक बहन का नहीं अपितु सब का होता है। मंडल के सभी सदस्यों को मंडल के कार्यों को महत्त्व देना चाहिए। मंडल से जुड़कर बहनों की अपनी एक पहचान बनती है। हमें कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि मंडल हमारे लिए क्या कर रहा है बल्कि यह सोचना है कि हम मंडल के लिए क्या कर रहे हैं। आपने बहनों को तत्त्व ज्ञान सीखने, सादगी पूर्ण एवं अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया, महामंत्री मधु देरासरिया सहित सभी पदाधिकारियों ने साध्वीप्रमुखाश्री व साध्वीवर्याजी के श्रीचरणों में प्रतिवेदन भेंट किया। महामंत्री मधु देरासरिया ने साध्वीप्रमुखाश्री के चरणों में कृतज्ञता ज्ञापित की। सत्र का संचालन सहमंत्री नीतू ओस्तवाल ने किया।

उत्कर्ष सत्र

सायंकालीन सत्र में शनिवार की सामायिक के साथ तेरापंथ प्रबोध एवं पुरानी ढालों का पुनरावर्तन करवाया गया। राजुल मनोत, शिल्पा बैद, संगीता बाफना (पालघर) ने प्रतियोगिता करवाई। कुमुद कछारा एवं निर्मला चंडालिया ने अर्हत् वंदना एवं जप करवाया। आतिथ्य देने वालों का सम्मान किया गया एवं स्थाई प्रकल्प/आयाम हेतु शाखाओं को मेमोटो प्रदान किए गए। संचालन अदिति सेखानी एवं रचना हिरण ने किया।

अभ्युदय सत्र

अधिवेशन के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र अभ्युदय सत्र का आयोजन साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के सान्निध्य में गानसाम्राज्ञी लता मंगेशकर ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ। महिला मंडल, सूरत के मंगलाचरण से प्रारंभ हुए इस सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने सभी का अभिनंदन किया और सभी बहनों को मोटिवेट करते हुए अपने विचारों की प्रस्तुति दी। प्रमुखाश्रीजी के प्रति अपने कृतज्ञ भावोद्गार प्रस्तुत किए। विपरीत परिस्थिति मर्यादित मनःस्थिति विषय पर साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा कि बहनों के विकास का श्रेय गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी को जाता है जिन्होंने बहनों को आगे लाने का चिंतन किया और आज उनके ही कारण बहनें अपना विकास कर स्वयं की पहचान बना रही है। पद तो एक व्यवस्था है। पदस्थ व्यक्ति तो कार्य करता ही है लेकिन पद मुक्त व्यक्ति को भी कार्य करते रहना चाहिए क्योंकि महत्त्व सभी का होता है सिर्फ पद का नहीं होता। संगठन के विकास के लिए सभी बहनों को सोचना है। सभी बहनों को अपना व्यवहार मधुर रखना चाहिए, क्योंकि हमारा व्यवहार हमारी पहचान है। प्रमुखाश्रीजी ने कहा सभी बहनों को अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण तथा कषायों को मंद करना चाहिए तभी वह अपने परिवार में खुशियाँ ला सकती है।

महासतीवरम के प्रेरक उद्बोधन के पश्चात 'संवाद महासतीवरम के साथ' एक सत्र रखा गया जिसमें बहनों ने अपनी जिज्ञासा रखी और प्रमुखाश्री जी ने सभी को समाधान दिया। साध्वी स्तुतिप्रभा जी द्वारा गीतिका का संगान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सभी अनुदानदाताओं एवं आचार्य महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति, मुंबई का अभिनंदन किया गया। उपाध्यक्ष सरिता डागा ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। सत्र का संचालन वीणा बैद ने किया।

उन्मेष सत्र

लुधियाना महिला मंडल के मंगलाचरण के साथ 'उन्मेष सत्र' का शुभारंभ हुआ। सुमन नाहटा ने पूरे सदन के समक्ष संविधान के मुख्य बिंदुओं को प्रश्नोत्तर शैली में बहुत ही रोचक तरीके से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन सरिता बरलोटा ने किया।

पुरस्कार एवं सम्मान सत्र के अन्तर्गत शाखा मंडलों द्वारा कृत कार्यों का मूल्यांकन करते हुए उन्हें सम्मानित किया गया। इस क्रम में वरीयता प्राप्त करने वाले क्षेत्र रहे–

कस्बा वर्ग में : प्रथम - गुरुग्राम; द्वितीय - बेहाला; तृतीय - चूरू; प्रोत्साहन - के०जी०एफ०, टी० दासरहल्ली, इस्लामपुर, डूंगरी।

ग्राम वर्ग में : प्रथम - नोएडा; द्वितीय - जलगांव, कांकरोली; तृतीय - मैसूर, फरीदाबाद; प्रोत्साहन - लाडनूं, कोयम्बतूर, पाली, राजाजीनगर।

शहर वर्ग में : प्रथम - काठमांडू; द्वितीय - रायपुर; तृतीय - सिलीगुड़ी; प्रोत्साहन - जोधपुर सरदारपुरा, राजाराजेश्वरी नगर।

नगर वर्ग में : प्रथम - विजयनगर; द्वितीय - पूर्वांचल कोलकाता, बालोतरा; तृतीय - उधना, उदयपुर; प्रोत्साहन - जयपुर सी-स्कीम।

महानगर वर्ग में : प्रथम - अहमदाबाद; द्वितीय - मुंबई, सूरत; तृतीय - साउथ कोलकाता।

कार्यक्रम का संचालन निधि सेखानी, तरुणा बोहरा एवं डॉ० वंदना बरडिया ने किया।

पुरस्कार एवं सम्मान सत्र में जूली मेहता एवं संगीता बाफना (पालघर) का सार्थक श्रम लगा।

अभिनव सत्र

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के साधारण सदन का आयोजन नन्दनवन - परिसर, मुम्बई में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ महिला मण्डल, रायपुर के मंगलाचरण से हुआ। महामंत्री मधु देरासरिया ने गत साधारण सदन की कार्यवाही का वाचन किया जिसे सदन ने सहर्ष पारित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सठिया ने अपने अन्तर्मन के उद्गारों को अभिव्यक्त करते हुए परम पूज्य गुरुदेव व समस्त चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की, शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी के प्रति वंदन एवं कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सम्पूर्ण राष्ट्रीय टीम के प्रति व सदन के प्रति आभार व्यक्त किया। महामंत्री मधु देरासरिया ने मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसे सदन ने पारित किया। कोषाध्यक्ष रंजू लुनिया ने आय व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया जिसे सदन ने स्वीकृत किया एवं डॉ० सूरज बरडिया ने संविधान वाचन किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने अपनी पूरी टीम सहित पद का विसर्जन करते हुए, गुरुदेव, प्रमुखाश्रीजी, साध्वी कल्पलता जी और शासनमाता को कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपने चारों माता-पिता को प्रणाम करते हुए अपना पद संपूर्ण कार्यसमिति के साथ विसर्जित किया।

शांता पुगलिया को कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया गया। तत्पश्चात चुनाव अधिकारी कुमुद कच्छारा व सह-चुनाव अधिकारी कल्पना बैद ने सरिता डागा का नाम वर्ष २०२३-२५ के लिए सदन के समक्ष रखा जिसे सदन ने सर्वसम्मति से पारित किया। मंगल मंत्रोच्चार के साथ सरिता डागा (जयपुर) को राष्ट्रीय अध्यक्ष (२०२३-२०२५) पद के लिए मनोनीत किया गया। नव-अध्यक्ष ने अध्यक्षीय पद को ग्रहण करने की स्वीकृति प्रदान की।

आस्था सत्र

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में प्रातःकाल भावना सेवा हेतु किचन वेन का लोकार्पण पूजयप्रवर के मंगलपाठ से किया गया। इस किचन वेन के प्रायोजक कन्हैयालाल-सुशीला पटावरी एवं महेंद्र नाहटा हैं। प्रातःकालीन प्रवचन के पश्चात आस्था सत्र का शुभारंभ हुआ। दक्षिण दिल्ली एवं मुम्बई महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। निवर्तमान अध्यक्ष नीलम सेठिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए विगत दो वर्षों में जाने अनजाने हुई भूलों के लिए पूज्य गुरुदेव से संपूर्ण महिला मंडल की तरफ से क्षमायाचना की। निवर्तमान महामंत्री मधु देरासरिया ने भी अपने उद्गार व्यक्त करते हुए मंत्री प्रतिवेदन का संक्षिप्त रूप गुरुदेव के समक्ष प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अगले चरण में श्राविका गौरव अलंकरण भंवरी देवी भंसाली को प्रदान किया गया और सीता देवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार शुभा मेहता, (न्यायाधीश-जयपुर हाईकोर्ट) एवं जयश्री जैन आईएएस (उपसचिव - छत्तीसगढ़ सरकार) को प्रदान किया गया।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

संगठन को कार्यकारी बनाए रखने के लिए शासन और अनुशासन अपेक्षित : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ६ अक्टूबर, २०२३

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के छठे दिवस-अनुशासन दिवस पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अनुशासन, शासन, प्रशासन–ये ऐसे तत्त्व हैं, जो संगठन को कार्यकारी बनाए रखते हैं। जहाँ अनुशासन-प्रशासन सही नहीं है, तो संगठन लड़खड़ा सकता है। जहाँ संगठन समाज है, वहाँ इन तत्त्वों की अपेक्षा रह सकती है।

स्वर्ग के ऊपर विभाग में कोई अनुशासन नहीं है, वहाँ देव सब समान है, स्वानुशासित होते हैं, वे कल्पातीत देव कहलाते हैं। जो विभाग कल्पोपन्न है, वहाँ व्यवस्था की अपेक्षा होती है। इनमें ६४ इंद्र होते हैं। अनुशासन दो प्रकार का हो सकता है–स्वानुशासन और परानुशासन। हमारे धर्मसंघ का एक घोष है–निज पर शासन, फिर अनुशासन। स्वयं पर अनुशासन करो फिर दूसरों पर अनुशासन करना सीखो।

गुरु और शिष्य दो होते हैं। गुरु स्वयं अनुशासन में रहे। गुरु हो या शिष्य, अनुशासित सबको रहना चाहिए। राजतंत्र में तो राजा स्थायी रह सकता है पर लोकतंत्र में सरकार बदल सकती है। लोकतंत्र में भी अनुशासन हो। कर्तव्य और अनुशासन के बिना लोकतंत्र का देवता मृत्यु को प्राप्त कर सकता है।

जो स्वयं शिष्य या अनुशासित नहीं है, वह दूसरों पर क्या अनुशासन कर सकेगा। हमारे सभी पूर्वाचार्य अपने गुरु के अनुशासन में रहे, तभी वे हमारे अनुशास्ता बने। गुरुदेव तुलसी ने तो अपने जीवनकाल में ही अपने शिष्य को आचार्य पद पर स्थापित कर दिया था।

विद्यालय हो या सामाजिक संस्थाएँ सब जगह अनुशासन हो। अर्हता का विकास हो। स्वयं पर स्वयं का अनुशासन रहे यह अर्हता हमारे में रहे। जहाँ सब अपने आपको नेता मानने लग जाएँ, सारे लोग अपने आपको पंडित मानते हैं और सबमें अवांछनीय महत्ता आ जाए पर पहले से अनुभव-अध्ययन या प्रतिष्ठा नहीं है, जहाँ ऐसी स्थिति रहती है, वो राष्ट्र दुःखी बन सकता है।

हमारे में बड़ों के अनुशासन में रहने का विनय भाव हो तो ही हम दूसरों पर अनुशासन कर सकते हैं। अनुशासन से ही धर्मसंघ या सामाजिक संस्थाएँ अच्छी प्रगति में रह सकती हैं। हम अनुशासन में रहने का प्रयास करें। हमारे जीवन में अनुशासन आए।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि जिंदगी में अनेक प्रश्न होते हैं, उनका समाधान प्राप्त करने के लिए जीने की कला आनी चाहिए। जीने की कला के सामने अन्य कलाएँ विकलाएँ हैं। समस्या जीवन में आ सकती है, पर शांति से जीना सीख लें तो समस्या सुलझ सकती है। सहजता से शांति का जीवन जीया जा सकता है। इसके लिए हम बात को सामान्य लेना सीखें और मान-अपमान में सम रहें।

मुंबई यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो० रवींद्र कुलकर्णी पूज्यप्रवर की सन्निधि में दर्शनार्थ पधारे। उन्होंने अपनी भावना व्यक्त करते हुए अनुशासन के महत्त्व को समझाया। नवभारत टाइम्स से जुड़े विश्वनाथ सचदेवा ने भी अपने विचार अभिव्यक्त किए।

अभातेममं के तत्त्वावधान में जैन स्कॉलर श्रुतोत्सव का आयोजन पूज्यप्रवर की सन्निधि में शुरू हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने अपने विचार रखे। जैन स्कॉलरों को डिग्रियाँ प्रदान की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

विश्व शांति के लिए अणुव्रत और सदाचार का होना आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ३ अक्टूबर, २०२३

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के तीसरे दिवस पर अणुव्रत यात्रा प्रवर्तक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है कि श्रेष्ठ यह है कि मैं स्वयं अपनी आत्मा का दमन करूँ, संयम करूँ, अनुशासन करूँ। अगर ऐसा नहीं हुआ तो दूसरों के द्वारा नियंत्रण में लाया जाऊँगा। अपने से अपना अनुशासन ही अणुव्रत की परिभाषा है।

अणुव्रतों को स्वेच्छा से स्वीकार किया गया है, तो अपने से अपना अनुशासन हो जाता है। धर्म का थोड़ा-सा अंश भी भय से मुक्ति दिलाने वाला होता है। धर्म का थोड़ा अंश अणुव्रत में है। अणुव्रत के व्रतों को कोई भी व्यक्ति स्वीकार कर अच्छा जीवन जी सकता है, अणुव्रती बन सकता है। वह आदमी किसी भी वर्ग का हो सकता है। अणुव्रत में धर्म-संप्रदाय के महत्त्व की बात नहीं है।

अणुव्रत व्यापक है, इसकी सीमा संकीर्ण नहीं है। देवों के बीच भी कोई अणुव्रत की बात कर सके, कारण वहाँ पर भी विवाद हो सकता है। अणुव्रती आत्माएँ जो देवलोक में गई हैं, वे वहाँ अणुव्रत के प्रसार की बात कर सकती हैं। अणुव्रत की बात विभिन्न कार्यक्रमों में करी जा सकती है। अणुव्रत जीवन में आए। तभी जीवन में परिवर्तन आ सकता है।

दुनिया में अच्छे भले आदमी भी बहुत हैं। तारतम्य हो सकता है। आदमियों में कमियाँ मिल सकती हैं। अणुव्रत असद् से सद्, अंधकार से प्रकाश और मृत्य से अमृत्य की ओर प्रस्थान है। अणुव्रत आदमी को बुराई से रोकने वाला संकल्प है। लिया हुआ संकल्प आदमी का सुरक्षा कवच, लक्ष्मण रेखा है।

अणुव्रत के साथ प्रेक्षाध्यान की साधना चलती है, तो जीवन में और अच्छी भावनात्मक विशुद्धि संपुष्ट हो सकती है। जीवन विज्ञान भी इन दोनों से जुड़ा दिवस है। जीवनशैली अणुव्रतों वाली बन जाए। जीवन सुखी रह सकता है। इहलोक और परलोक अच्छा रह सकता है। सादा जीवन, उच्च विचार। मानव जीवन का शृंगार। सादगीपूर्ण जीवन हो।

जीवन चलाने के लिए रोटी, कपड़ा, मकान और शिक्षा व चिकित्सा चाहिए। कम संसाधनों से काम चल सकता है। अनैतिकता से अर्थार्जन का प्रयास न हो। पैसा है तो उसका दुरुपयोग न हो। साधनों के लिए साधन शुद्ध हो। जन-जन के मन में अणुव्रत-सदाचार का विचार हो तो विश्व भी अच्छा हो सकता है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आदमी को एक दिशा ही पकड़नी चाहिए ताकि सही लक्ष्य मिल सकता है। मानव जीवन कीमती है। हमें बड़ा लक्ष्य बनाना चाहिए। लक्ष्य ऐसा होना चाहिए जो जीवन को सुलझाने वाला, आगे बढ़ाने वाला और भावी जीवन भी अच्छा बनाने वाला हो। व्यवहार के धरातल पर हमारा लक्ष्य हो कि मैं अच्छा इंसान बनूँ। जीवन में मानवीयता, ईमानदारी और विनम्रता का भाव हो।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए

भवरलाल कर्णावट फाउंडेशन द्वारा बोधि सम्मान पुरस्कार-२०२१ डॉ० जतनलाल डागा एवं २०२२ का बोधि सम्मान भी पारसमल दुगड़ को प्रदान किया गया। लक्ष्मणसिंह कर्णावट, डॉ० जतनलाल डागा, पारसमल दुगड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

आश्रव के निरोध से गुणस्थान का ग्राफ ऊँचा चढ़ता है : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवर, ८ अक्टूबर, २०२३

अर्हत् वाङ्मय के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के सत्रहवें शतक के तीसरे उद्देशक में कहा गया है–प्रश्न किया गया कि भंते! शैलेषी अवस्था में अणगार ऐदन, भेदन स्पंदन, घटन आदि ऐसा होता है क्या? आगम में चौदह गुणस्थान बताए गए हैं। चौदहवाँ गुणस्थान है–उपयोगी केवली गुणस्थान।

ज्यों-ज्यों आश्रव का निरोध और संवर का विकास होता है, तो गुणस्थानों का विकास होता जाता है, ग्राफ ऊँचा चढ़ता जाता है। ग्यारहवें गुणस्थान में कषाय उपशम हो जाता है। बारहवें गुणस्थान में कषाय क्षय हो जाते हैं। ग्यारहवें गुणस्थान वाला आगे नहीं बढ़ता है, नीचे गिर जाता है। क्षायक श्रेणी वाला ग्यारहवाँ गुणस्थान को छुता ही नहीं है।

तेरहवाँ गुणस्थान सयोगी केवली का है और चौदहवाँ गुणस्थान अयोगी केवली का है। पहले गुणस्थान में भी थोड़ी गुणवत्ता होती है। चौदहवें गुणस्थान में साधु मेरू पर्वत की तरह अडोल हो जाता है, चंचलता मिट जाती है। शैलेषी अवस्था है, अप्रकंपन स्थिरता हो जाती है। आदर्श है कि स्थरता देखनी हो तो चौदहवें गुणस्थान के साधु की देखें। वह तो नवकार मंत्र भी नहीं बोलता है। ध्यान साधना को प्राप्त वह साधु होता है। उसका कालमान भी पाँच ह्स्वाक्षर जितना है।

हमारा जीव जन्म-मरण करते-करते वह भव्य जीव चौदहवें गुणस्थान में चला जाता है। ८, ९, १०, १२, १३ व १४वाँ गुणस्थान संसारी अवस्था में एक बार ही आते हैं। पूज्यप्रवर ने प्रवचन से पहले ध्यान का प्रयोग करवाया था। जब भी विश्राम करना हो तो कार्य के साथ ध्यान-कायोत्सर्ग को जोड़ें। चलते समय भावक्रिया को जोड़ दें। ट्रेन-प्लेन में यात्रा कर रहे हैं तो उस समय भी ध्यान-स्वाध्याय किया जा सकता है। दिनचर्या में एक सामायिक भी करने का प्रयास करें। सुबह की सामायिक तो अमृत है। अध्यात्म को जीवन में जोड़ें।

अध्यात्म की सर्वोच्च अवस्था शैलेषी अवस्था है। तेरहवें गुणस्थान वाला तो प्रवचन आदि भी करता है। छठे गुणस्थान से साधु की भूमिका शुरू होती है।

आगम संपादन के अंतर्गत जैविभा द्वारा प्रकाशित ग्रंथ 'अंतगड़ दशाओं' पूज्यप्रवर को लोकार्पित किया गया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि संसार का अंत करने वाले व्यक्तियों का वर्णन है। गुरुदेव तुलसी ने आगम संपादन का कार्य शुरू किया था। आज भी वह कार्य प्रवर्धमान है। गुरुदेव तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का विशेष आशीष रहा है। बहुश्रुत मुनि दिनेश कुमार जी एवं मुनि योगेश कुमार जी का इस आगम संपादन में विशेष श्रम रहा है।

मुनि योगेश कुमार जी ने इस ग्रंथ की संक्षिप्त जानकारी दी। इस ग्रंथ में मुक्ति हासिल करने का द्वारा बताया गया है। आत्मा का नैसर्गिक साम्राज्य में प्रवेश करने की प्रेरणा है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञानात्मक विकास के साथ भावात्मक...

(पृष्ठ १५ का शेष)

जीवन विज्ञान शिक्षा में पूरक बनने वाला तत्त्व है। भावात्मक विकास विद्यार्थी का होना चाहिए। सेवा करना है तो ज्ञान भी चाहिए। ज्ञानात्मक विकास के साथ भावात्मक विकास हो। गुस्सा और लोभ भी नियंत्रित हो। गुस्सा, लोभ और भय भावात्मक विकास में बाधक है, ये नरक के द्वार हैं।

विद्यार्थी में ज्ञान के विकास के साथ भावात्मक विकास हो, तो वह योग्य बन जाता है। शारीरिक विकास के साथ मानसिक और भावनात्मक विकास भी हो। बालक, पालक, शिक्षक और संचालक चारों मिलकर प्रयास करें कि विद्यार्थी में सद्-संस्कारों का विकास हो। अंकों को पाने की अभिलाषा के साथ अध्ययन के प्रति भी आकर्षण हो। साथ में सद्‌गुणों का भी विकास हो।

माता-पिता, शिक्षक व मित्रों के साथ बच्चे का उनके स्तर का विनय भाव-व्यवहार हो। जीवन विज्ञान यह संदेश देता है कि ज्ञान के साथ अच्छा मानसिक और भावनात्मक विकास हो। ज्ञानार्जन भी सारस्वत और श्रमसाध्य साधन है। साथ में संस्कार भी अच्छे हों। कोरा ज्ञान सब कुछ नहीं है। स्वास्थ्य भी अनुकूल रहे। पद के साथ पावर आता है। पावर से ही लोग उसकी बात मानते हैं। बच्चे अच्छे होंगे तो भविष्य अच्छा हो सकेगा।

अणुविभा के मंत्री मनोज सिंघी एवं स्थानीय अणुव्रत समिति अध्यक्ष रोशनलाल मेहता ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के समापन की घोषणा करते हुए मुंबई में अणुव्रत के कार्य निरंतर करते रहने की प्रेरणा प्रदान करवाई।

अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने ४८वें अधिवेशन कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। आचार्य तुलसी कर्तृत्व पुरस्कार-२०२३ राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा रेखा शर्मा को प्रदान किया गया। सूरज बरड़िया ने रेखा शर्मा का परिचय दिया। रेखा शर्मा ने अपने विचार रखे। प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा भी रेखा शर्मा का सम्मान किया गया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। मूलचंद नाहर जो इस पुरस्कार के सहयोगी हैं, ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
16 & 22 vDVwcj] 2023

F मित्र बनाने से पूर्व योग्य और अयोग्य का विवेचन होना चाहिए।
–आचार्य श्री महाश्रमण

समणी रूपी शिष्या की अर्जी स्वीकार कर प्रदान की साध्वी दीक्षा

पूर्ण विकास के लिए ज्ञान के साथ संस्कार आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ५ अक्टूबर, २०२३

तेरापंथ धर्मसंघ के देदीप्यमान महासूर्य आचार्य महाश्रमण जी ने गुरुवार को अपनी समणी रूपी शिष्या समणी पावनप्रज्ञा की अर्जी पर महती कृपा बरसाते हुए मुख्य प्रवचन में साध्वी दीक्षा प्रदान की। प्रातःकाल में परम पावन ने परम कृपा करते हुए समणी पावनप्रज्ञा जी की श्रेणी आरोहण कराने की स्वीकृति प्रदान करवाई। समणी अक्षयप्रज्ञा जी ने समणी पावनप्रज्ञा जी का परिचय दिया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी एवं मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने समणी जी के प्रति मंगलभावना अभिव्यक्त की।

संयम प्रदाता आचार्यश्री ने श्रेणी आरोहण कराते हुए जिन वाणी का स्मरण करते हुए आचार्य भिक्षु एवं पूर्वाचार्यों की स्मृति करते हुए नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ सामायिक चारित्र समणी पावनप्रज्ञा जी को ग्रहण करवाया। नवदीक्षित साध्वीश्री ने पूज्यप्रवर को वंदना की। पूज्यप्रवर ने अतीत की आलोचना करवाई। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने केश लोचन किया एवं रजोहरण (प्रमार्जनी) प्रदान करवाया गया। नामकरण संस्कार कराते हुए पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित साध्वीश्रीजी का नाम साध्वी पावनप्रज्ञा रखा।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने करोड़ों लोगों को नशामुक्ति का संकल्प वर्तमान के करवाया है और सतत प्रयास चालू है। कहा गया है कि नशा नाश का मूल है।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के पाँचवें दिन नशामुक्ति दिवस पर नशामुक्ति अभियान के प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि आदमी का जीवन अच्छे व्रतों के साथ जुड़ जाता है, जीवन संयमित बन जाता है। जिस जीवन में संकल्प हो जाता है, वह जीवन अच्छा बन जाता है।

जीवन का पहला भाग किशोरावस्था का है। विद्यार्थी विद्यालय में ज्ञान अर्जन करते हैं। जीवन में अच्छाई आ सकती है। आदमी सुशिक्षित बन जाता है। शिक्षा के साथ अच्छे संस्कारों का भी वपन हो। ज्ञान आधा विकास है, साथ में अच्छे संस्कार हैं, तो विद्यार्थी का पूर्ण विकास हो सकता है। विद्यार्थी कुसंस्कारों से बचे।

नशा भी एक ऐसी आदत हो जाती है कि आदमी उसके बिना रह नहीं सकता है। जो चीजें नुकसानदेह हैं धर्म की दृष्टि से स्वास्थ्य और विकास की दृष्टि से ऐसी चीजों से आदमी बचने का प्रयास करे। ईमानदारी सर्वोत्तम नेकी है, यह जीवन में आ जाए तो जीवन में सुंदरता आ सकती है।

जीवन में अहिंसा की भावना भी हो। ज्यादा गुस्सा न हो। जो नशा दुर्दशा करने वाला है, उसका त्याग कर दिया जाए तो आर्थिक लाभ भी हो सकता है। बचपन से ही संकल्प हो जाए कि नशा नहीं करना है। युवा-किशोर आज कितने ड्रग्स, शराब आदि के सेवन में लिप्त हैं और कठिनाई भी अनुभव करते होंगे। अणुव्रत का संदेश-जीवन में नशा न हो यह व्यक्ति की रग-रग में समा जाए, संकल्पित हो जाएँ तो जीवन अच्छा हो सकता है।

यह मानव जीवन बड़ा महत्त्वपूर्ण है, दुर्लभ माना गया है। विद्यार्थियों को तीन प्रतिज्ञाओं को सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाएँ। नशामुक्ति का संदेश व्यक्ति के जीवन में, आत्मा में प्रवेश करे। विद्यार्थियों को चारों ओर से अच्छे संस्कार मिलें, ऐसा अभिभावकों, शिक्षकों को प्रयास करना चाहिए।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में अनेक शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थी पहुँचे हैं। अनीश ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। प्रो० मिराज ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुनि अभिजीत कुमार जी ने स्कूल के बच्चों को प्रेरण प्रदान करवाई। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सेवा संस्कार संगठन
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्
द्वारा वर्ष 2023 के लिए प्रदत्त
अलंकरण/पुरस्कार

युवा गौरव
श्री भरत मरलेचा
चेन्नई

आचार्य महाप्रज्ञ
प्रतिभा पुरस्कार
श्री अजय भूतोड़िया
USA

आचार्य महाश्रमण
युवा व्यक्तित्व पुरस्कार
डॉ. धवल दोशी
अहमदाबाद

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अंतिम दिन और सातवाँ दिवस–जीवन-विज्ञान दिवस
पूज्यप्रवर की सन्निधि में अभातेममं का त्रि-दिवसीय ४८वाँ अधिवेशन का शुभारंभ

ज्ञानात्मक विकास के साथ भावात्मक विकास हो : आचार्यश्री महाश्रमण

नंदनवन, ७ अक्टूबर, २०२३

गुरुदेव तुलसी के शासनकाल में मुनि नथमल जी द्वारा प्रदत्त एक अवदान है–जीवन-विज्ञान। जो जन-जन के लिए तो उपयोगी है ही पर विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास में विशेष उपयोगी है।

जन-जन के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि यह पुरुष-मानव अनेक चित्तों वाला होता है। स्थूल शरीर के साथ आत्मा का नाम तत्त्व भी है। यह शरीर अशाश्वत है, तो आत्मा शाश्वत तत्त्व है। आत्मा और शरीर के योग से हमारा वर्तमान जीवन है। हमारे में बुद्धि है, शरीर है, मन है, वचन है।

बुद्धि अपने आपमें अच्छी चीज है। बुद्धि को अच्छा मानता हूँ। बुद्धि का भी विकास हो। बुद्धि के साथ शुद्धि का भी विकास हो तो बुद्धि सही रास्ते पर चल सकती है।

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने जीवन विज्ञान को आगे बढ़ाया जो शिक्षा तंत्र से जुड़ा है। शिक्षा भी अनिवार्य तत्त्व है। अनेक विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय मिलते हैं, जो शिक्षा प्रदान का कार्य करते हैं। शिक्षा के प्रति सरकार, अभिभावक आदि जागरूक है। शिक्षा अपने आपमें उपयोगी तत्त्व है।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

vf[kyHkkjrh; rsjkiaFk ;qod ifj"kn~ ds fy, eqnzd] izdk'kd ,oa laiknd & **iadt cbZ;kjMxk** }kjk eS- th-ds- Qkbu vkVZ izsl] lh&1] ,QvkbZ,Q] iVi M+xat]
vkS|ksfxd {ks=k] fnYyh&110092 ls eqfnzr rFkk 210] nhun;ky mik/;k; ekxZ] ubZ fnYyh & 110 002 ls izdkf'kr A dk;Zdkjh laiknd % **fnus'k ejksBh**